अक्तूबर, 1981
वर्ष 17 ❋ अंक 4
मूल्य 2.50

ज्ञानामृत

ऊपर : ब्रह्माकुमारी बहनें नर्सों को राखी का पवित्र संदेश सुनाते हुए

मध्य : ब्रह्माकुमारी बहनें अजमेर में पत्रकारों को राखी बांधती हुई

नीचे : कपूर्थला में ब्र० कु० बहनें कैदियों को राखी बांध रही हैं। उन्हें "पवित्र बनो, योगी बनो" का सन्देश दिया गया

ब्र० कु० सुन्दरी जी भारत के राष्ट्रपति को राखी बांधने के पश्चात् आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही हैं। ब्र० कु० भाग शिव बाबा की याद में हैं

ब्र० कु० पुष्पा देहली में भारत के उप-राष्ट्रपति भ्राता हिदायतुल्ला जी को राखी बांधते हुए

गुजरात की राज्यपाल बहन शारदा मुकर्जी को 'पवित्र बनो योगी बनो' का सन्देश लिये राखी बांधते हुए

भारत के सचार विभाग के उपमन्त्री भ्राता पाटिल जी आबू में दादी प्रकोशमणि जी से ईश्वरीय सौगात लेते हुए। दीदी मनमोहिनी जी तथा कुरुणा भाई भी चित्र में दिखाई दे रहे हैं

दिल्ली के उप-राज्यपाल भ्राता एस. एल. खुराना को राखी बांधने के पश्चात् उनके साथ ब्र० कु० चक्रधारी, सुधा, दादा किशनचन्द, सती बहन तथा ब्र० कु० सुन्दरलाल खड़े हैं

अमृत-सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ	क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	फ़रिश्ता कैसे बनें ?	१	१०.	राखी के पावन पर्व पर ईश्वरीय सेवा (सचित्र)	२१
२.	सन्तोष के तुल्य गुण नहीं, गुण के तुल्य संग (सम्पादकीय)	२	११.	सतयुग और एक भाषा	२२
३.	रक्षा बंधन पर ईश्वरीय सेवा समाचार (चित्रों में)	५	१२.	कौन ज़िम्मेवार ?	२६
४.	पर चिंतन दुःखमयी	६	१३.	शुद्ध आहार गुरु ग्रंथ साहब के आधार पर	२७
५.	कर्म करो ऐसे (गीत)	११	१४.	निराली पथिक (कविता)	२८
६.	सतयुग और सत्य	१२	१५.	ईश्वरीय सेवा समाचार (चित्रों में)	२९
७.	क्यों तंग करें तूफ़ान ?	१५	१६.	एक भेंट	
८.	कर्म, कर्मेन्द्रियाँ व कर्म योग	१६	१७.	रक्षा बन्धन तथा जन्माष्टमी पर की गई ईश्वरीय सेवाएं	३४
९.	कुछ भूली बिसरी यादों की झलकियाँ	२०	१८.	ईश्वरीय सेवा समाचार (चित्रों में)	३७

फ़रिश्ता कैसे बनें ?

ब्रह्माकुमारी कमलमणि (कृष्णानगर) द्वारा संकलित

फ़रिश्ता बनने के लिए निम्नलिखित सात द्वारों में से निकलना अति आवश्यक है :—

(१) बहुत काल का अव्यभिचारी योग चाहिए, जिसके लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। अगर योग टूटता है तो फ़रिश्तेपन की स्टेज पर नहीं बैठ सकते।

(२) बहुत काल का यह अभ्यास हो कि बाप की श्रीमत में भूलकर भी मनमत मिक्स न करे। अगर सूक्ष्म में भी मनमत मिक्स करने की आदत है तो ऊपर उड़ने की बजाए नीचे आ जाएंगे।

(३) बहुत काल से प्रैक्टिकल जीवन में तुम्हीं संग बैठूं, तुम्हीं संग बोलूं, तुम्हीं संग खाऊं, यह अभ्यास चाहिए।

(४) बहुत काल से बीती को भुलाने की प्रैक्टिस हो। यदि कोई बात आवे भी तो तुरंत संकल्पों के प्रवाह को परिवर्तन शक्ति के आधार से मोड़ दे दो।

(५) बहुत काल से कर्मेन्द्रिय जीत, प्रकृति जीत, माया जीत, विकर्माजीत तथा निद्राजीत की स्थिति में रहने का अभ्यास हो।

(६) बहुत काल से अशरीरी बनने का अभ्यास चाहिए। हलचल वा विपरीत परिस्थिति में तो विशेष अशरीरी बनने का अभ्यास चाहिए, तभी अंत समय में भी अशरीरी बन सकेंगे। निद्राजीत भी तभी बन सकेंगे जब अशरीरी बनने का अभ्यास होगा।

(७) बहुत काल से धर्मराज बाप के पास रिकार्ड ठीक हो, तभी बाप की नज़रों में रिगार्ड होगा।

ऊपर लिखित सात द्वारों में से गुजरने के लिए अपनी दिनचर्या में निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखना बहुत आवश्यक है :—

(१) सारे दिन की दिनचर्या में अपने को एकान्त प्रिय बनाएं तथा प्रतिदिन कम से कम आधा घंटा तो अवश्य एकाँत तथा एकाग्रता का अभ्यास करें।

(२) सारे दिन की दिनचर्या में अंतर्मुखी होकर

(शेष पृष्ट ३ पर)

सन्तोष के तुल्य गुण नहीं, गुण के तुल्य संग···

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ने जो सोलह-सूत्री कार्यक्रम निश्चित किया है, उसके अन्तर्गत एक धारणा सूत्र में यह कहा गया है कि हम स्वयं में भी संतुष्ट रहेंगे और दूसरों को भी सन्तुष्ट करेंगे। निस्सन्देह सन्तुष्टता एक बहुत ही महान् और महत्त्वपूर्ण गुण है और योगी के लिए तो यह परमावश्यक ही है क्योंकि यदि योगाभ्यासी स्वयं से सन्तुष्ट नहीं होगा या वह मन में सोचता होगा कि दूसरे उससे सन्तुष्ट न हो कर रुष्ट हैं या उससे किसी को कष्ट हुआ है तो उसका योग में भी स्थायित्व तथा अभ्यास में एकाग्रता ही नहीं हो पायेगी और वह 'आनन्द' के उत्कृष्ट अनुभव से वंचित ही रह जाएगा। इसके अतिरिक्त बाबा ने यह भी तो कहा है कि 'मन-पसन्द', 'लोक पसन्द' और 'प्रभु-पसन्द'—इन तीन योग्यताओं में सफल होना परम सौभाग्यपद प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है। इन तीनों में उत्तीर्ण होना भी उसी अर्थ को प्रगट करता है जिसको 'सन्तुष्टता' शब्द व्यक्त करता है। अतः जबकि सन्तुष्टता ही महानता भी है और हमारी सफ़लता का प्रमाण भी, तो प्रश्न उठता है कि इस अनमोल गुण को कैसे धारण करके सन्तोष किया जाय ?

दुनिया तो खटराग-भरी है !

बात यह भी है कि आज की तो दुनिया ही खट-राग-भरी है। इसमें पहला राग तो यह है कि अपने मन में ही कोई-न-कोई इच्छा लगी रहती है। एक साँसारिक व्यक्ति के मन में तो इच्छाओं का ताँता ही लगा रहता है परन्तु ज्ञानवान मनुष्य को भी सेवा-कार्य में सफ़लता या वृद्धि की कामना या ज्ञानवान लोगों के बीच मान्यता या प्रगति की इच्छा यत्किंचित —थोड़ी-बहुत होती ही है। तो जब तक शुभ या अशुभ—किसी भी प्रकार की इच्छा मनुष्य के मन को घेरे रहेगी तब तक सन्तुष्टता मन में कहाँ स्थान पायेगी ?

दूसरी बात यह है कि इस कलिकाल में हम जिन लोगों के सम्पर्क में आते हैं, उनमें से कई तो 'झंझटी-राम' और 'झमेली' देवियाँ होती ही हैं। उनके साथ रहकर स्वयं भी सन्तुष्ट होना और उन्हें भी संतुष्ट करना ऐसा लगता है जैसे आकाश को पैवन्द लगाना।

तीसरे हम देखते हैं कि आज की दुनिया में प्रायः घटनाएँ दुर्घटनाओं ही के रूप में घटित होती हैं, परिवर्तन अपने साथ नित्य नई समस्याएँ लाते हैं और प्रकृति परेशानियों को पैदा करने में लगी रहती है।

तो जबकि दुनिया ही ऐसी है तब यह श्रेष्ठ गुण कैसे धारण किया जाय ?

धारणा के लिए युक्तियाँ

महाभारत में एक प्रसंग आया है जिसमें बताया गया है कि दुर्योधन और अर्जुन दोनों से जब पूछा गया कि उन्हें क्या चाहिए तो दुर्योधन ने भगवान से सर्व सेना माँग ली परन्तु अर्जुन ने कहा—"मुझे आपके सिवा कुछ भी नहीं चाहिए। आप मेरा मार्ग-दर्शन करें, मेरा साथ दें, मुझे छात्रछाया दें तो मैं मानूंगा कि मुझे सब-कुछ मिल गया। इस रोचक आख्यान से भी यही अर्थ-बोध होता है कि प्रभु-प्राप्ति हो जाय तो इच्छाओं का अन्त हो सकता है, वरना तो उम्मीद (आशा) का सितारा नभ-मण्डल में जितने तारे हैं, उतनों को साथ लेकर बना ही रहेगा। सूर्य प्रगट होता है तो तारे छिप जाते हैं। अतः यदि हम यह सोचें कि हमें शिवबाबा मिल गए तो गोया सभी-कुछ मिल गया, तो हमारी इच्छाएँ और चिन्ताएँ एक-साथ ही मिट जायेंगी क्योंकि भगवान् तो सभी ख़ज़ानों के शाश्वत एवं अतुल भण्डार हैं और भोले वरदानी हैं। यदि हम ऐसा मानते हैं तब फिर इच्छा कैसी ? वे तो सभी भण्डारे स्वतः ही भरपूर करने

वाले हैं। कृष्ण और सुदामा की कथा में बताया गया है कि सुदामा को तो मालूम ही नहीं था कि उसके लिए महल बनवा दिया गया है। अत: हमें जब ज्ञान मिला है, पहचान मिली है, शिव बाबा का हाथ और उनकी छत्र-छाया प्राप्त हुई है तो इच्छा करना ही अविद्या है और अविद्या में पड़ना तो स्वयं को घाटे में डालना है।

अन्यश्च, जहाँ तक आज के लोगों की बात है, वह तो हमें ज्ञान मिल ही चुका है कि यह दुनिया कैसी है। तभी तो बाबा ने उसे ठीक करने की सेवा हमें दी है। हम तो विश्व के परिवर्तक हैं और झमेले को ईश्वरीय मेले में और झंझट को झूले में बदलने वाले हैं। हमें तो बाबा ने विघ्न-विनाशक की उपाधि दी है और 'विजयी रत्न' कहकर पुकारा है। अत: स्व-परिवर्तन द्वारा हमें विश्व-परिवर्तन का कार्य करना है। दूसरों की सेवा करके उनका आशीर्वाद लेना है। उन्हें शान्ति की राह दिखाकर स्वयं में भी सन्तुष्ट होना है।

जहाँ तक परिस्थितियों और समस्याओं का प्रश्न है, उसके बारे में तो बाबा ने बताया ही है कि उन्हें स्व-स्थिति से ठीक करना है अथवा अपने पूर्व-कर्मों का फल मानकर सहन करना है और उनमें अचल रह कर 'अंगद' का टाइटल प्राप्त करना है।

सन्तुष्टता का सम्बन्ध अन्य गुणों से है

वास्तव में बात यह है कि सन्तुष्टता रूपी गुण अकेला कभी भी धारण नहीं हो सकता। इच्छाओं के अन्त के लिए **'त्याग'** और 'वैराग्य' रूपी गुण धारण करना ज़रूरी है। भाँति-भाँति के लोगों और भिन्न-भिन्न संस्कारों तथा विचारों वाले व्यक्तियों के बीच रहने के लिए **'सहनशीलता' 'नम्रता', 'सेवा', 'सहयोग', 'स्नेह'** और **'मधुरता'** रूपी गुण धारण करने की ज़रूरत है। इसी प्रकार, विकट परिस्थितियों को पार करने के लिए 'आत्म-विश्वास' 'ईश्वरीय-निश्चय' और 'धैर्य' की धारणा ज़रूरी है। इन सभी गुणों की साथ-साथ धारणा करने की कोशिश किये बिना सन्तुष्टता को धारण नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि सन्तोष या सन्तुष्टता को एक मुकुट से उपमा दी गयी है जिसे प्राप्त करने के लिए सारी प्रजा को जीतना होता है। सोचने की बात है कि कर्मेन्द्रियों को वश किये बिना तथा मन के व्यर्थ संकल्पों को मिटाये बिना सन्तुष्टता भला कैसे आ सकती है? पुनश्च नम्रता, मधुरता, त्याग, सेवा और सहयोग के बिना दूसरों को कैसे सन्तुष्ट किया जा सकता है? फिर दूसरों को सेवा और स्नेह से सन्तुष्ट किये बिना हम प्रभु-पसन्द भला कैसे बन सकते हैं। और, प्रभु-पसन्द तथा लोक-पसन्द बने बिना हम मन-पसन्द अथवा स्वयं में सन्तुष्ट कैसे हो सकते हैं? अत: इस प्रकार सोचने से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सन्तुष्ट होना और दूसरों को सन्तुष्ट करना गोया विश्व के चक्रवर्ती राज्य-पद को प्राप्त करने के तुल्य है और उसके लिए अपने ऊपर पूरा अधिकार (Control) प्राप्त करना ज़रूरी है। तभी हम सतयुगी विश्व के अटल एवं अखण्ड राज्य को प्राप्त कर सकते हैं।

जगदीश

(फ़रिश्ता कैसे बनें पृष्ठ १ का शेष)

रहने का अभ्यास करें।

(३) अपनी दिनचर्या को बीच-बीच में चैक करो तथा रात्रि को अपने चार्ट में विशेष तीन बातें चैक करो :—

(१) क्या मैं सारा दिन रायल राजयोगी रहा अर्थात् सारा दिन बाबा मेरे साथ रहा। ऐसा तो नहीं कि मेरे किसी संकल्प के कारण बाबा ने मुझ से मुँह मोड़ लिया हो?

(२) क्या मैं सारा दिन दिव्य गुणों की रायल्टी में रहा?

(३) क्या आज मेरी चढ़ती कला हुई? अगर नहीं हुई तो क्यों नहीं हुई?

अगर इस प्रकार का शौक पैदा हो जाए तो अंतिम स्थिति कोई दूर नहीं। फिर तो वाहन तैयार है।

★

"प्राचीन भारत का गौरव" विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता

निबन्ध देने की अवधि में परिवर्तन

सूचना मिली है कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय तथा तिरुमल तिरुपति देव-स्थानम ने मिलकर, प्राचीन भारत की गौरवमय संस्कृति और सभ्यता के विषय में लोगों को अधिक जानकारी देने तथा शोध कार्य करने के कार्य को प्रोत्साहन देने के संकल्प से जो 'निबन्ध प्रतियोगिता' आयोजित की थी, उसके लिए निबन्ध भेजने की अवधि को बढ़ा कर ३१ दिसम्बर, १९८१ अन्तिम तिथि घोषित किया है।

मालूम रहे कि आयोजकों ने इस प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार, १०,००० रु०, दूसरा ५,००० रुपये और तीसरा ७५० रुपये निश्चित किया हुआ है। प्रतियोगिता के विषय में नियमों आदि की पूरी और सही जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित दोनों स्थानों में से किसी पर भी पत्र भेजा जा सकता है—

१. प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय
१९, श्री नरोत्तम निवास,
पास किंग्स सर्कल स्टेशन,
सियान, बम्बई—४०००२२
फोन ४७३०१५

२. एक्ज़ेक्टिव आफ़ीसर,
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्स्,
तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश)
फोन—२०९१

राम बनवास

वास्तव में 'राम' शब्द भगवान का वाचक है अतः राम को बनवास भेजने का अर्थ भगवान को मन से निकाल कर वन में भेजना है! 'लक्ष्मण' मन में लक्ष्य को और 'सीता' पवित्रता का वाचक है। मनुष्य यदि भगवान को मन से निकाल देता है तो पवित्रता और उच्च लक्ष्य भी साथ ही चले जाते हैं।

केन्द्रीय मन्त्रियों तथा राज्य के मुख्यमन्त्रियों को रक्षा-बन्धन पर ईश्वरीय सन्देश

ब्र० कु० चक्रधारीजी भ्राता ए० पी० शर्मा, केन्द्रीय पर्यटन तथा उड्डयन मन्त्री को पवित्रता की सूचक राखी बांध रही हैं। साथ में ब्र० कु० सुधा तथा भ्राता सुन्दरलाल जी खड़े हैं

उड़ीसा के मुख्यमन्त्री भ्राता जानकी बल्लव पटनायक को ब्र० कु० कमलेश राखी बांधते तथा ईश्वरीय सन्देश देते हुए साथ में ब्र० कु० सुशीला शिव बाबा की याद में

केन्द्रीय योजना मन्त्री भ्राता एस० वी० चवान को ब्र० कु० चक्रधारी पवित्रता तथा स्नेह-सूचक राखी बांधते हुए, ब्र०कु० सुधा स्मृति का टीका देने की तयारी में तथा भ्राता सुन्दरलाल जी शिव बाबा की याद में खड़े हैं

भ्राता शिवचरण माथुर मुख्य-मन्त्री राजस्थान ब्र० कु सुकर्मा जी से पवित्रता तथा स्नेह की सूचक राखी बन्धवा रहे हैं

लातुर में केन्द्रीय राज्य संरक्षण मन्त्री भ्राता शिवराज पाटिल को ब्र० कु० महादेवी जी ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही हैं

ब्र० कु० निर्मल पुष्पा बिहार के मुख्यमन्त्री डा० जगन्नाथ मिश्रा को पावन राखी बांधते हुए। पीछे भ्राता रमेन्द्र जी खड़े हैं

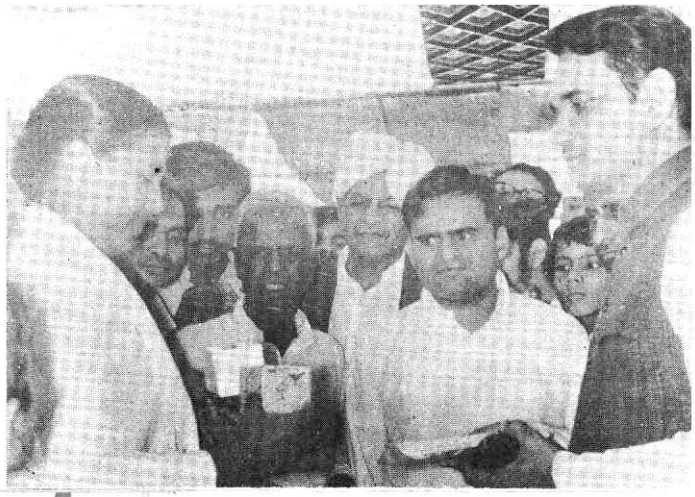

ऊपर चित्र में ब्र० कु० सुशीला उड़ीसा के कृषि मन्त्री भ्राता वासुदेव महोपात्रा को पावन स्नेह की सूचक राखी बांध रही हैं। पीछे भ्राता रामेश्वर जी दिखाई दे रहे हैं

ब्र० कु० निर्मल पुष्पा बिहार विधान सभा के अध्यक्ष भ्राता राधानन्दन झा को रक्षाबन्धन के पश्चात् आत्म-स्मृति का टीका लगाते हुए, ब्र० कु० निर्मलमणि योगदान देते हुए

राजस्थान के वित्तमन्त्री भ्राता चन्दनमल जी ब्र० कु० सुकर्मा जी से स्नेह सूचक राखी बन्धवा रहे हैं

रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर ब्र० कु० उमा (धर्मशाला) हिमाचल के मन्त्री भ्राता सतमहाजन को आध्यात्मिक साहित्य भेंट कर रहीं हैं। साथ में ब्र० कु० साहब सिंह, पुरुषोत्तम भाई खड़े हैं

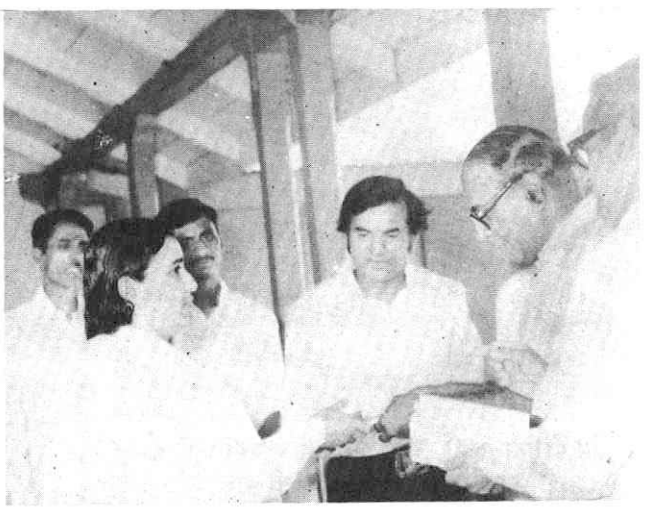

ब्र० कु० कमलेश उड़ीसा के वित्तमन्त्री भ्राता रघुनाथ पटनायक को राखी बांधते हुए "पवित्र बनो योगी बनो" का ईश्वरीय सन्देश दे रहीं हैं। ब्र० कु० सुशीला बाबा की याद में उपस्थित हैं

ब्र० कु० राज नेपाल में नेपाल राष्ट्रीय पंचायत के अध्यक्ष भ्राता मरीचभानसिंह जी को पवित्रता तथा स्नेह की सूचक राखी बांध रही हैं। साथ में ब्र० कु० सीतु जी खड़ीं हैं

शिमला में ब्र० कु० अरुणा हिमाचल प्रदेश के शिक्षामन्त्री भ्राता शिवकुमार जी को पवित्रता की सूचक राखी बांध रही हैं

Gसा के शिक्षा मन्त्री भ्राता गंगाधर महोपात्रा जी ब्र० कु० कमलेश जी से पवित्रता की सूचक राखी बंधवा रहे हैं

nरयाणा के स्वास्थ्य मन्त्री भ्राता गजराजसिंह जी को ब्र० कु० आभा जी राखी बांध रही हैं

बिहार के शिक्षा मन्त्री भ्राता नसीरउद्दीन हैदरअली खां को ब्र० कु० निर्मला पुष्पा राखी बांध रही हैं। साथ में ब्र० कु० इन्द्रा तथा पटना के भाई राधेश्याम, रमेन्द्र खड़े हैं

बिहार के श्रम एवं राष्ट्र भाषा के मंत्री भ्राता योगेश्वर प्रसाद योगेश को निर्मलमणि रक्षाबन्धन के पश्चात् 'प्रसाद' दे रही हैं। साथ में पटना के भाई बैठे हैं

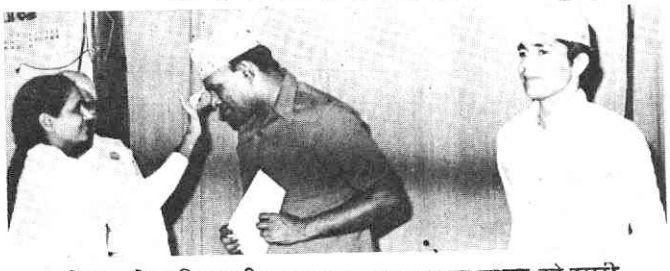

नेपाल के कृषि मन्त्री भ्राता रामानन्द प्रसाद यादव को राखी बांधने के पश्चात् ब्र० कु० रांज बहन आत्म-स्मृति का तिलक दे रही हैं

ब्र० कु० निर्मलमणि बिहार के लघु सिंचाई एवं धार्मिक न्यास के मन्त्री भ्राता जगनारायण को आत्मिक स्मृति का टीका दे रही हैं

बड़ौदा में रक्षाबधन के पावन पर्व पर गुजरात के वित्तमन्त्री सनत भाई मेहता को ब्र० कु० निरंजना बहन राखी बांध रही हैं। साथ में ब्र० कु० राज, मनुभाई तथा डा० जयन्त भाई खडे हैं

शिलांग में आसाम के वित्त तथा आपूर्ति मन्त्री को ब्र० कु० शीला जी चित्रों की व्याख्या दे रही हैं

नेपाल के गृहमन्त्री भ्राता नयन बहादर सवांर को ब्र० कु० राज पवित्रता की सूचक राखी बांध रही हैं

बारीपदा में उड़ीसा के एक्साईज़ मन्त्री भ्राता हबीबुला ख बड़े ध्यानपूर्वक ब्र० कु० चन्द्रमोहन से चित्रों की व्याख्या सु रहे हैं

कटक में ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी जनता को शिव बाबा का सन्देश देते हुए। मंच पर बाएं से ब्र० कु० मजु, सन्देशी, कमलेश, भ्राता गंगाधर महोपात्रा (शिक्षा मन्त्री उड़ीसा) भ्राता रघुनाथ पटनायक (वित्तमन्त्री उड़ीसा) ब्र० कु० रमेश तथा चन्द्रमोहन जी बैठे हैं

नेपाल के संचार राज्यमन्त्री भ्राता फत्तेसिंह थारू को ब्र० कु० राज बहन राखी बांधते हुए 'पवित्र बनो योगी बनो' का सन्देश दे रही हैं

परचिन्तन—दुःखदायी

(ब्र० कु० सुभाष, उज्जैन)

'परचिंतन' की प्रवेशता सूक्ष्म होती है जिसका अनुमान भी लगा नहीं पाते हैं। अपने ही स्वभाव और संस्कारों के वशीभूत होने से भी परचिंतन अकुंरित हो जाता है। सबसे अधिक परचिंतन प्रस्फुटित होता है—देह के सम्बन्ध, सम्पर्क से। सम्बन्ध और सम्पर्क में आए ही और विचारों का भी आना शुरू हो जाता है। किसी की महिमा, प्रशंसा करने को भी मैं एक परचिंतन ही कहूँगा क्योंकि जिसकी महिमा, प्रशंसा की जा रही है उस समान स्वयम् को नहीं बना पाने से भी निराशा, व्यर्थ के संकल्प उठ जाते हैं, उदासी आ जाती है, इच्छा शक्ति कमज़ोर हो जाती है। प्रोत्साहन, उत्साह के बजाय मन और ही खिन्न हो जाय तो इसे 'परचिंतन' नहीं तो क्या कहेंगे ?

परचिंतन जब चरम सीमा पर होता है तो फिर वाणी द्वारा बाहर आता है जो निन्दा का स्वरूप बन जाता है, अर्थात् परचिंतन का रूप निन्दा ने ले लिया। ठीक है यदि वाणी द्वारा बाहर निकाल भी दिया है तो उसे समाप्त कर देना चाहिए परन्तु लोग उसे दोहराते ही रहते हैं। जब मिलेंगे तो कहीं न कहीं से वे ही विचार लाकर रोना रोयेंगे। इस तरह 'परचिन्तन' करना स्वभाव बन जाता है। परचिंतन करने वाला दुखी होता ही है साथ ही दूसरों को चिंतन के लिए विवश कर देता है।

परचिन्तन का सबसे अधिक प्रभाव योग पर पड़ता है। व्यर्थ संकल्प आयेंगे, बुद्धि स्थिर नहीं हो सकेगी, वृत्ति में चंचलता आ जायेगी। शुभ संकल्प भी आ रहे होंगे फिर भी उन संकल्पों को स्वरूपता प्रदान नहीं कर सकेंगे। दिव्य गुणों का समावेश कर नहीं पायेंगे। दिव्य गुण नहीं होते, आनन्द और प्रसन्नता भी नहीं। जितना परिवर्तन चाहते हैं परन्तु कर नहीं पाते हैं। ज्ञान और व्यवहार में सन्तुलन नहीं हो पाता है। फिर एक दूसरे को दोषारोपण कर स्वयम् का बचाव करते हैं। अमुक के कारण मेरी अवस्था ऐसी हो गई, या उसका स्वभाव, संस्कार मुझसे मेल नहीं ख़ाता है। इस तरह के चिंतन का प्रभाव पढ़ाई पर पड़ता है, पढ़ाई छूट जाती है, परमात्मा से प्राप्त होने वाली अविनाशी प्रारब्ध से भी वंचित हो जाते हैं। जिस चिंतन से क्षति हो वह निश्चित ही परचिंतन ही हुआ।

जो व्यक्ति चिंतन करते हैं उनकी चिन्तन में आसक्ति हो जाती है चाहे आत्म चिन्तन या पर चिन्तन ही क्यों न हो। परचिन्तन का अभ्यासी होने पर, आसक्ति होने से विकार ही उत्पन्न होंगे—क्रोध, राग, द्वेष, सभी गुह्य रूप से अपना प्रभाव दिखायेंगे। इससे बुद्धि एक परमात्मा में लग नहीं सकती। इसीलिए गीता में कहा है—'श्रुति विप्रतिपन्ना···योगमवाप्स्यसि' 'भांति-भांति के वचनों को सुनने से विचलित् हुई बुद्धि जब अचल, स्थिर ठहर जायेगी तब तू योग अर्थात् तेरा परमात्मा से नित्य संयोग हो जायेगा।" बुद्धि के नाश होने से अधोःपतन हो जाता है जिससे अन्तःकरण की प्रसन्नता, आनन्द, शान्ति का लोप हो जाता है। अतः परचिन्तन से एक योगी को परहेज रखना ही चाहिए।

देह अभिमानी परचिंतन को झट स्वीकार कर लेते हैं और फिर उसे मन ही मन बढ़ा लेते हैं जिससे मुक्त होने में कठिनाई होती हैं। कभी-कभी आत्माभिमानी भी न चाहते हुए भी परचिंतन की चपेट में आ जाते हैं लेकिन वे ज़्यादा देर तक उसमें रमते नहीं। उससे उनकी अवस्था पर क्षणिक ही प्रभाव पड़ता है जो बाद में ऐसा अनुभव होता है कि कुछ हुआ ही नहीं।

परचिन्तन की उत्पत्ति भी दो प्रकार से होती है—

(१) यथार्थ स्थिति द्वारा

(२) संशय या अनुमान द्वारा

(१) **यथार्थ स्थिति द्वारा**—किसी का व्यवहार, स्वभाव, संस्कार बोल भी परचिंतन को उद्दीप्त करते हैं। इस प्रकार के परचिंतन में आमना-सामना होने के अवसर अधिक होते हैं। मान लीजिये मैंने किसी के कार्य कलाप को देखा जिसके परिणाम स्वरूप संकल्पों का आना शुरू हुआ और ये संकल्प-चिंतन चलता रहेगा जब तक कि जिस विशेष कारण से हुआ वह प्रत्यक्ष मुझे सन्तुष्ट करे या स्पष्टीकरण दे। इस तरह के परचिंतन में स्पष्टवादिता तो होती है परन्तु यह स्पष्टवादिता ईर्ष्या, द्वेष को भी अंकुरित करने में सक्षम होती है।

जिस व्यक्ति या परिस्थिति के द्वारा परचिंतन हुआ, वे जब भी सामने आयेगी तो पुनः परचिंतन को प्रोत्साहित करेगी। 'यथार्थ स्थिति' से उत्पन्न हुआ परचिंतन सदा बना रहता है। इसके अंश को समाप्त करना इतना आसान नहीं है क्योंकि इसमें तर्क की गुंजाईश अधिक है। परचिंतन करने वाले को सन्तुष्ट करना चाहेंगे तो भी नहीं होगा क्योंकि उसका तो यही तर्क रहेगा—मैंने स्वयम् देखा, अनुभव किया है। उसने ऐसा कहा था या ऐसा उसने किया। इसमें जो धारणा एक बार व्यक्ति विशेष के प्रति बन गई वह परिवर्तित होती नहीं जिस प्रकार दर्पण टूट गया तो उसमें पड़ी लकीर अवश्य दिखेगी।

घृणा, द्वेष, तिरस्कार, संकल्प-विकल्प शुरू हुए या दुख की अनुभूति हुई तो समझना चाहिए कि यह परचिंतन ही है। यथार्थ होते हुए भी दुख की अनुभूति हो तो परचिंतन ही हुआ ?

इस तरह के परचिंतन से विरक्त कब हो सकते हैं ? आत्म-ग्लानि से अर्थात् किये हुए कर्म पर पछतावा होने पर। जब पश्चाताप होगा कि मैंने उसका अवगुण क्यों देखा ? मैंने इतना निकृष्ट चिंतन क्यों किया ? मुझमें ये शूद्रपन के संस्कार क्यों आए ? कहाँ मेरा लक्ष्य और कहाँ मैं ? आत्म-ग्लानि भी स्वतः ही होती है क्योंकि परचिंतन एक योगी के लिए योग में विघ्न है। वह विघ्न बनकर योग समाप्त अवश्य करेगा, विघ्न बनकर आवेगा। योग में विघ्न आने पर शनैः शनैः आत्म-ग्लानि की उत्पत्ति होगी उससे दूर रहने का अभ्यास ही करना चाहिए।

यथार्थ द्वारा उत्पन्न हुए परचिंतन करने वालों का सामना नहीं करना चाहिए अर्थात् उन्हें समझाने की आवश्यकता नहीं क्योंकि उसका परचिन्तन तो सत्य देखने से ही उत्पन्न हुआ है। वह किसी की बात को स्वीकार नहीं करेगा।

(२) **संशय या अनुमान द्वारा**—संशय और अनुमान से भी परचिन्तन उत्पन्न होता है। इस प्रकार के परचिन्तन में, जिस कारण से परचिन्तन हुआ उसकी उत्पत्ति का निराकरण हो जाय तो परचिंतन शीघ्र ही नियंत्रित होकर समाप्त हो जाता है। यहाँ पश्चाताप इतना नहीं होता जितना कि पूर्व वाली अवस्था में। कहने का भाव यह है कि वास्तविकता ज्ञात हुई और परचिन्तन समाप्त, हल्कापन अनुभव होता है। जब कि पहली वाली अवस्था में वास्तविकता ज्ञात है फिर भी परचिन्तन बहता रहता है, यहाँ तो संशय का समाधान चाहिए।

किसी के प्रति कुछ भी मन में धारणा बना लेना और उसकी पालना करते रहना भी परचिन्तन है। किसी भी बात का सामयिक निराकरण नहीं हुआ तो पूर्वाग्रह भी परचिन्तन का स्वरूप बन जाता है।

परचिंतन से परे होने की युक्ति

निश्चित ही 'परचिंतन' दुखदाई है जो आत्मा को अपने परमात्मा से मिलने में विघ्नरूप में आता है। योगी की अवस्था को छिन्न-भिन्न करने में कसर नहीं छोड़ता है। इसलिए कहा है परचिन्तन दुखदाई है तथा आत्म-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है।

परचिन्तन से छुटकारा मिल सकता है। जिस व्यक्ति, वैभव, परिस्थितियों के कारण एक बार भी परचिन्तन हुआ है, दूसरी बार उनको देखते हुए भी न देखना चाहिए, उनसे परे हो जाना चाहिए या दूसरी बार भी परचिन्तन का आक्रमण हो तो यह

ही समझना चाहिए कि अमुक व्यक्ति, परिस्थितियाँ मेरी परीक्षा ले रही हैं, ये मेरे पेपर्स हैं, परीक्षा पत्र हैं।

परचिन्तन से छुटकारे के लिए 'सहनशीलता' का प्रतिशत बढ़ाना चाहिए। जितनी सहनशक्ति होती जायेगी उतना ही उस प्रकार के चिंतनों को दूर कर सकते हैं।

यदि किसी को परचिन्तन करने की प्रवृत्ति है तो उसके प्रति शुभ भावना से मनसा, वाणी द्वारा सहयोगी बन उसके इस तरह के चिन्तन को समाप्त करने में सहयोग देना चाहिए ताकि उस परचिन्तन को वह यहाँ वहाँ वर्णन नहीं कर सके। एक दूसरे के स्वभाव संस्कार से टकराना नहीं चाहिए। सबसे मूल बात है—बाप पर निश्चय। बाप मेरा और मैं बाप का। मन और बुद्धि बाप को दे दो तो शान्ति, सुख आनन्द स्वतः ही प्राप्त हो जायेगा। ज्ञान में निश्चय होना भी आवश्यक है—ज्ञान में निश्चय है तो धारणाएँ भी होंगी और धारणाएँ हैं तो दैवी गुण भी आयेंगे और जब दैवी गुण आ गये तो शिकवा, शिकायत (पर चिन्तन) तेरी मेरी सब समाप्त हो जायेगा।

—:०:—

गीत

लेखक—ब्र० कु० मोहन भाई (अमृतसर)

कर्म करो ऐसे

(स्थाई) कर्म करो ऐसे भाई तुम
पड़े ना फिर पछताना-२
एक दिन तो धर्मराज को
पड़ेगा मुख दिखलाना-२
कर्म करो भाई···कर्म करो

(१) मन में औरों के लिए, बुरा ना सोच चलाओ
निन्दा करता है तुम्हारी, अपना उसे बनाओ
आंखों से कब बुरा ना देखो, पड़े जो आंख झुकाना
कर्म करो·····

(२) मुख से औरों को दुःख देने वाले बोल नां बोलो
अपने मुख से ज्ञान रत्न, भण्डारे अब तुम खोलो
कानों से कब सुनो नां ऐसा पड़े जो कान खिचाना
कर्म करो·····

(३) ऐसा जीवन हो जो हंसते हंसते घर को जाओ
धर्मराज के आगे तुम निर्भय होकर जाओ
ऐसा नां हो खाता अपना पड़े जो वहाँ पछताना
कर्म करो·····

○

सतयुग और सत्य

ब्रह्माकुमारी उषा, बम्बई

भारत में 'सत्यम् वद, धर्मम् चर' आदि सिद्धान्त बचपन से सिखाये जाते हैं। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की कथा भी बच्चों को मार्ग-दर्शन हेतु सिखाते हैं। परन्तु फिर भी आज की दुनिया में सभी लोग, सत्य का मूल्य यथार्थ रूप में कहाँ तक जानते हैं यह एक प्रश्न है। यदि सत्य के मूल्य को यथार्थ रूप में जान जाएं तो हरेक चीज का सत्य अर्थ क्या है, रूप क्या है, बीज क्या है तथा परिणाम आदि क्या है उसी पर संपूर्ण रूप से विचार करते और यदि हरेक बात या चीज का सत्य अर्थ आदि जानते तो जीवन में अनुमान न होता, अनेक विचार न होते, अनेक मार्ग न होते, और सत्यता की वास्तविक पहचान के कारण अनेकता खत्म होकर एकता की स्थापना होती।

सत्य की शक्ति क्या है तथा सत्य का रूप क्या है, ये बहुत गुह्य बातें हैं। व्यवहार में हम सब जानते हैं कि असत्य का पराभव और सत्य की विजय होती है परन्तु आज की सृष्टि में यह कोई नहीं जानता कि सत्यता को जानने से सत्ययुग की स्थापना होती है। जब सत्य को जानने और मानने वाले सत्य की शक्ति को पहचानेंगे तब उन्हें मालूम होगा कि सतयुग का आधार, नींव (Foundation) या जड़ सत्य ही है। भौतिक, आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक आदि सब बातों का आधार सत्य है। जब सभी आत्माएं इन सब बातों के सत्य स्वरूप को जानते थे और उसी सत्य रूप के आधार पर व्यक्तिगत या सामाजिक जीवन व्यतीत करते थे तब जो समय इस सृष्टिचक्र का था उसे सतयुग कहते हैं। सतयुग की सत्यता की महानता को जानना, समझना और अनुभव करना यह बहुत मुश्किल बात है और इसे नहीं जानने तथा मानने वाले सतयुगी सृष्टि के प्रारब्ध से वंचित रह जाते हैं। सतयुग के सुखों से वंचित होने का मुख्य कारण है सतयुग की सत्यता का अज्ञान।

परमपिता शिव धर्मराज है। एक-दो मिनिट के लिए कल्पना कीजिए कि धर्मराज की कचहरी लगी है और धर्मराज की इस कचहरी में धर्मराज स्वयं अपनी रचना अर्थात सतयुग की वास्तविक पहचान देने की एक ब्रीफ (Brief) लेकर शिवबाबा उपस्थित हों और फिर एक ज्ञानसागर, त्रिकालदर्शी, सर्वश्रेष्ठ वकील कैसे अपनी बात – रचना की सत्यता को सिद्ध करता है, उसी तरह की अनुभूति अव्यक्त बापदादा की ११-४-८१ की मुरली पढ़कर होती है। विश्व के सभी सत्य को मानने वाले, सत्य के पुजारी, सत्य के प्रचारक, सत्य पर मर मिटने वाले, सत्यमेव जयते को मानने वाले या उसी को मुद्रालेख समझकर राज्य कारोबार करने - कराने वाले, सत्य की जांच करके उसी के आधार पर न्याय करने वाले, न्यायमूर्ति आदि-आदि सबको यह मुरली पढ़ना अति आवश्यक है। तभी उन्हें सत्यता की महानता और उसके आधार पर सतयुग की सत्यता को अनुभूति होगी। सत्य की विधि और विधिपूर्वक सत्य को जानने से विधि-विधाता बन सकते हैं अर्थात सिद्धि स्वरूप बन सकते हैं। सत्यता अर्थात रीयल्टी (Reality) ही महानता है और यह सत्यता की ही मान्यता है ऐसा विधान करके शिवबाबा ने सत्य का सत्य स्वरूप बताया है। सत् ही सत्य, सत् ही अविनाशी है। इस प्रकार से ये दो अर्थ बताकर बताया कि सत् सदा सत्य है और सदा के लिए अविनाशी है। परमात्मा भी सत्य है तो अविनाशी भी है इसलिए परमात्मा सत है। परन्तु इस सिद्धान्त का यह अर्थ नहीं है कि सत्य परमात्मा है। सत्य अवि-

नाशी है परन्तु सत्य परमात्मा नहीं है। इसी कारण सर्व अविनाशी चीजें सत हैं परन्तु अविनाशी चीजें परमात्मा नहीं हैं। परमात्मा को 'अविनाशी' के आधार पर सर्वव्यापी मानने वालों की भ्रांति, इसी सत्य परिचय से दूर होती है। अंग्रेजी भाषा में भी परमात्मा का परिचय इसी प्रकार देंगे कि "God is TRUTH but Truth is not God" सत में और परमात्मा में क्या अन्तर है इस महान सत्य की पहचान यदि शास्त्रों आदि पढ़ने वालों को हो जाए तो वे कदापि परमात्मा को सर्वव्यापी मानेंगे नहीं।

सत्य परमपिता परमेश्वर सत की पहचान देकर हमें हरेक बात की सत्यता बताते हैं। सबसे पहले आत्मा को अपने स्वरूप की सत्यता की पहचान मिली। अपने स्वरूप की सत्यता जानने से कर्मों में परिवर्तन हुआ। अपना सत्य स्वरूप क्या था और क्या मानते थे, इन दोनों के बीच के महान अन्तर को पहचानने से जमीन-आसमान का अन्तर मालूम पड़ा। जब तक अपने को सत्य स्वरूप में नहीं जाना है तब तक महानता आ नहीं सकती। महानता के आधार पर ही महात्मा बन सकेंगे। अपने आप का सत्य परिचय मिलने से कर्मों की महानता का ज्ञान मिला। महान कर्मों के आधार पर ही नई सतयुग की रचना होती है क्योंकि सतयुग में सदा सत्कर्म ही होते हैं। अपने स्वस्वरूप की अज्ञानता के आधार पर सत्कर्म कदापि न हो सके।

इसी तरह सत्य बाप का परिचय मिला। लौकिक, अलौकिक तथा पारलौकिक पिता का परिचय मिला। परमात्मा के सत्य परिचय की शक्ति कितनी महान है? पारलौकिक पिता के सम्बन्ध के सत्य परिचय से हमें शिवपिता से वर्से का अधिकार प्राप्त हुआ। यह सत्यता का दूसरा अविनाशी सिद्धान्त है कि परमपिता के सत्य परिचय के आधार पर हमें परमपिता से वर्से का अधिकार मिलना है। अर्थात सर्व-श्रेष्ठ वर्से का अधिकार प्राप्त कराने की शक्ति परमात्मा के सत्य परिचय में निहित है। वर्से का अर्थ है ही सतयुग की दुनिया में प्रवेश पाने का अधिकार। यदि सर्व को मालूम हो जाए कि सतयुग यह शिवबाबा से प्राप्त वरसा है तो सतयुग एक कल्पना है यह भ्रांति दूर हो जाए। आज की दुनिया के वर्से का अनुभव तो सबको है। यदि यह अल्पकाल के वर्से सत्य हैं तो अविनाशी परमपिता परमात्मा से प्राप्त अविनाशी वर्सा अर्थात सतयुगी दैवी स्वराज्य की दुनिया कैसे असत्य या कल्पना हो सकती है?

इसी तरह सत्य बाप से ज्ञान मिला अर्थात उनकी रचना का सत्य परिचय मिला। सत सदा अविनाशी है, परमात्मा सत है तो उनकी रचना कैसे विनाशी या मिथ्या हो सकती है? तब 'ब्रह्म सत्य, जगत् मिथ्या' का जो गलत सिद्धान्त शास्त्रकारों ने सिखाया है उसकी अयथार्थता मालूम पड़ती है। रचता और रचना के सत्य परिचय से सृष्टि के आदि, मध्य, अंत अर्थात सृष्टि-परिवर्तन को जानते हैं अर्थात परिवर्तन की सत्यता को जानते हैं। परिवर्तन की सत्यता को जानने से रचना के परिवर्तन के पहिले हम आत्माएं स्व-परिवर्तन करते हैं। विश्व परिवर्तन होगा तब तो सबका परिवर्तन होगा और सभी यहां से मूल-वतन में चले जायेंगे परन्तु विश्व परिवर्तन के पहिले स्व-परिवर्तन करने वाले ही सतयुगी दुनिया में आ सकेंगे। अर्थात सृष्टि-चक्र का सत्य परिचय हमें सर्व-श्रेष्ठ प्रारब्ध बनाने में अर्थात समय से पहले स्व-परिवर्तन लाने में मदद करता है।

इसके साथ-साथ आत्मा, परमात्मा तथा सृष्टि चक्र के सत्य ज्ञान की शक्ति का प्रकृति पर क्या प्रभाव है? सतयुग में प्रकृति सतोप्रधान क्यों है, इसका कारण यही है कि इन तीनों बातों की सत्यता की शक्ति सर्व प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाती है। युग को सतयुग बना देती है। सत्यता की यह शक्ति सर्व आत्माओं के गति या सद्गति की तकदीर बना देती है। सत्यता की इस शक्ति के आधार पर ही विविध धर्म की आत्माएं अर्थात विविध धर्मों में मान्यता रखने वाली तथा उन धर्म-स्थापकों के बाद इस सृष्टि पर गति के बाद सद्गति का पार्ट बजाएंगी। अर्थात विश्व में जो भी आत्माएं हैं वे

चाहे सतयुगी-सुवर्णयुग में आएं या अपने-अपने धर्म के या पंथ के सुवर्ण-युग में आयें, यह सभी विविध समय के क्रमानुसार श्रेष्ठ-कर्म तथा भाग्य का आधार है सत्यता की शक्ति। अर्थात सत्यता की शक्ति के आधार पर द्वापरयुग से अपने-अपने धर्म में क्रमानुसार श्रेष्ठ पद मिलेगा।

कवियों ने कल्पना की है कि एक पारसमणी होता है, वह पारसमणी लोहे को भी सोना बना देता है। सतयुग को अंग्रेजी में 'Golden age' सुवर्ण युग कहते हैं और कलियुग को 'Iron age' अर्थात 'लोह युग' कहते हैं। सत्यता एक पारसमणी है। उसकी इतनी महानता है कि उस महानता के स्पर्श द्वारा अर्थात इस पारसमणी द्वारा कलियुगी-लोहे की दुनिया का सतयुगी-सुवर्ण युग में परिवर्तन होता है। सत्यता ही पारसमणी समान महानता के आधार पर—

(१) आत्मा को (२) प्रकृति को (३) समय को (४) सर्व सामग्री को (५) सर्व सम्बन्धों को (६) संस्कारों को (७) आहार को (८) व्यवहार को—सतोप्रधान बनाती है। अर्थात सतयुग वह है जहाँ पर लिखी ८ बातें या चीजें सतोप्रधान हैं। सत्यता की यह शक्ति तमोगुण का नाम-निशान समाप्त कर देती है।

सत्यता की महान शक्ति के आधार पर आत्माओं की निम्नलिखित बातें अविनाशी हो जाती हैं—

(१) नाम—आधा कल्प प्रजा नाम गायेगी और आधा कल्प भक्त नाम गायेंगे।

(२) रूप—आधा कल्प चैतन्य रूप में अविनाशी और आधा कल्प चित्रों के रूप में अविनाशी।

(३) देश—भी अविनाशी बनता है। भारत अविनाशी खंड है कारण इस भूमि पर सत्यता की महानता का प्रचार हुआ है। इस देश के तत्वों ने भी सत्यता की महानता को पहिचाना है और उसी कारण यहां का व्यवहार और वायुमंडल दोनों अविनाशी बन गये और उनके आधार पर यह देश अविनाशी हो गया।

(४) वेष—भी अविनाशी हो गया। आधा कल्प देवताई वेष का यादगार चलेगा।

(५) वंश भी अविनाशी हो गया।

(६) कर्त्तव्य और चरित्र भी सत्य हो गये। हरेक कर्म या कर्तव्य यादगार बन गया।

परमात्मा की यह सब बातें यादगार हैं इसीलिए ही उन्हें सत-पिता, सत्-गुरु तथा सत-शिक्षक कहते हैं। परन्तु आत्माओं का नाम, रूप, देश, काल, कतव्य इत्यादि श्रेष्ठ हो गये उसका कारण यह सत्यता की शक्ति है और उसी का फलस्वरूप है सतयुग।

अन्त में सत-पिता हमें सत्य की एक और महानता बताते हैं। कहते हैं जहाँ सत्यता है वहाँ सत्-बाप है और वहाँ सदा विजय है। सत्यता की महानता सत-पिता को और विजय को भी अपने पास बुला लेती है, आकर्षित करती है। सत्यता की शक्ति इस तरह पारसमणी है, तो वशीकरण मंत्र भी है जिसके फलस्वरूप स्वयं परमपिता भी आत्माओं के वश हो जाते हैं अर्थात उन्हों के पक्ष में आते हैं और उसके परिणामस्वरूप विजय भी सदा उनकी ही है। विजय के लिए सत्यता का त्याग करने वालों के लिए यह बात एक सावधानी दे रही है कि सत्यता की उपेक्षा करने से, उसका त्याग करने से, सदाकाल की विजय कभी भी—कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता। सदाकाल की विजय की प्राप्ति अर्थ सत्यता की शक्ति को जरूर धारण करना पड़ेगा। सत्यता से सदाकाल की विजय मिलेगी ना कि विजय के आधार पर सत्यता सिद्ध होगी।

इसके अतिरिक्त एक और बात शिवबाबा बताते हैं। सत्य को जानने वाले ही पांडव हैं। पांडव कम होते हैं परन्तु पांडवों ने ही सत्यता की सम्पूर्ण शक्ति को पहिचाना और उसी कारण उनकी विजय अर्थात सतयुग की स्थापना हुई। अर्थात सतयुग यह पांडवों की विजय का पावन चिन्ह है। पांडव-पति, पांडव तथा पावन सृष्टि यह सब सत् है, अविनाशी है। इस

तरह से सतयुग सत्य है, अविनाशी है, कारण यह कि सतयुग सत की शक्ति का परिणाम है। सतयुग सत्-परमपिता परमात्मा की रचना है। सतयुग सत्-विधि का विधान या सिद्धि स्वरूप है। सतयुग को न मानना अर्थात सत् की सत्यता और अविनाशिता को अस्वीकार करना। सतयुग को न मानना अर्थात अपने को श्रेष्ठ प्रारब्ध से वंचित करना, मिले हुए पारसमणी की विस्मृति करना, सदाकाल की विजय से वंचित होना, वशीकरण मन्त्र को न जानना, पांडव और पांडवपति को न जानना, रचयिता तथा रचना की सत्यता को न जानना।

क्यों तंग करें तूफान ?

(ब्र० कु० राजकुमारी, शालीमार बाग, देहली)

अंधियारे में दीप शिखा सी,
घोर तिमिर में उजरी विभा सी,
तेरी जीवन विश्व के समक्ष;
तू देवे भटकों को लक्ष,
तो फिर क्यों तंग करें तूफान ?
सौंपा नहीं क्या बाबा को प्राण !

अरे ! बाबा दे रहे अखुट ख़ज़ाने,
क्रियमाण कर यही इसके माने;
अमृत वेले के बाबा के वरदान,
प्राप्त कर और करे गर दान
तो क्यों तंग करें तूफान ?
सौंपा नहीं क्या बाबा को प्राण ?

है यह समय अन्तिम पुरुषाथ का
बाप सम बन करे जो सार्थकता
न तोड़े गर मर्यादाओं की चट्टान,
तो क्यों तंग करें तूफान ?
सौंपा नहीं क्या बाबा को प्राण !

अब तो करनी है वायब्रेशन से सेवा
सब को ही देनी है शान्ति की मेवा
अब सब की नज़रें तेरी ओर,
जगती पर दुःखों का ओर न छोर,
ऐसे में—
व्यस्त रहे गर करता रहे योगदान,
तो क्यों तंग करें तूफान ?
सौंपा नहीं क्या बाबा को प्राण !

अपना बोझ बाबा को दे दे,
मज़दूरी न कर सिंहासन ले ले,
बातों के—
सुनने-सुनाने को दे न कान
तो क्यों तंग करें तूफान ?
सौंपा नहीं क्या बाबा को प्राण !

तू देवात्मा, तू श्रेष्ठात्मा,
तू बनाए सभी को पुण्यात्मा,
बजी रहे हरदम कर्णों में—
बाप-दादा की सुरीली तान।
तो क्यों तंग करें तूफान ?
सौंपा नहीं क्या बाबा को प्राण !

"कर्म, कर्मेन्द्रियाँ व कर्म योग"

(लेखक योगीराज, मधुबन, माउण्ट आबू)

कर्म योग, आध्यात्मिक जीवन के परमानन्द का वास्तविक आधार है। कितनी श्रेष्ठ व कर्मातीत स्थिति होती है और मन में कितना अलौकिक सुख समा जाता है, जब हाथ कार्य करते हैं और मन अपने प्रियतम के पास विश्राम करता होता है ! जब मुख कुछ वार्तालाप करता है और मन अपने परमपिता के सामीप्य का रस ग्रहण करता रहता है। अगर आत्मा कर्म योगी नहीं तो कर्म आत्मा को अवश्य बाँधते हैं। कर्मयोगी स्थिति ही आत्मा को कर्म बन्धन से मुक्त करती है। कर्मयोग कर्म करने की श्रेष्ठतम कला है। परन्तु इस अति श्रेष्ठ कला में कुछ विजयी रत्न ही सफल होते हैं, अधिकतर तो इसमें गौण ही पाये जाते हैं।

कर्मयोग व कर्म

योग के द्वारा विकर्म नष्ट हो जाते हैं और श्रेष्ठ कर्म करने का बल व साहस प्राप्त होता है, परन्तु कर्म में इस योग का अभ्यास करने के लिए, उस मनुष्यात्मा के पास अनेक पुण्य कर्मों का खाता जमा होना चाहिए। जैसे भगवान की प्राप्ति बहुत ही पुण्य कर्मों के बाद होती, वैसे ही ईश्वरीय प्राप्ति के बाद कर्म-योग की सरलता भी पुण्य कर्मों का ही वरदान है। इसलिए कर्मयोग के मुमुक्षुओं को पुण्य का खाता बढ़ाना चाहिए। पाप कर्म आत्मा को बार-बार नीचे खींचते हैं, उन आत्माओं की ओर खींचते हैं जिनसे पाप का खाता जमा है। इसलिए पाप के खाते को न बढ़ने देने का दृढ़ संकल्प करना चाहिए, तब ही योग सहज अनुभव होगा।

इन पुण्य कर्मों में इस बात का परम महत्व है कि हम किसी भी पुण्यात्मा को दुःख न दें, हम उनकी उन्नति के मार्ग में बाधक न बनें। हम उन्हें बन्धन न डालें, हम उनके कदम पीछे न खींचें। अन्यथा पवित्र आत्माओं के मन से निकली आह, हमें योग-युक्त नहीं होने देगी और हम कर्मों को बन्धन अवश्य महसूस करेंगे।

इसी के साथ-साथ हम अपने पुरुषार्थी जीवन में यह चैक करें कि हमसे कोई ऐसा कर्म तो नहीं हो रहा है जिससे दूसरी आत्माओं के संकल्प चल रहे हों। दूसरों के संकल्पों के बोझ को ढोने वाली आत्मा कर्मयोगी नहीं बन सकती। मन से सभी को सुख देने वाली तथा सभी के प्रति श्रेष्ठ भावनाएँ रखने वाली आत्माएँ ही कर्म की तीव्रता में भी सरल चित्त होकर योग-युक्त हो सकती हैं।

इन सबसे भी मुख्य बात—जो कर्म प्रभु को प्रिय नहीं हैं वे कर्म प्रभु-प्रेमियों को भी प्रिय नहीं होने चाहिए। बाबा कहते हैं, मुख से रत्नों की बौछार करो, तुम्हारे मुख से फूल झड़ें, तुम्हारे मुख से वरदानों की बरसात हो। परन्तु कोई भोला भाई अगर मुख से पत्थर निकालने में ही अपना श्रेय समझता हो, तो वह सदा दूसरों के सुखी मन को दुःख देने वाला कभी कर्मयोग के ईश्वरीय सुख का अधिकारी नहीं हो सकता।

इसी बात को और सूक्ष्मता से देखा जाए—शिव-बाबा की जो श्री मत हमें मिली है, उसका पालन न करने वाली आत्मा भी सूक्ष्म बोझ से दब जाती है। उसका मन उसे बार-बार धिक्कारता है कि अरे तुम भगवान की बात भी नहीं मानते, फिर तुम उसके बने ही क्यों हो। और उसका खुश व सन्तुष्ट न रहने वाला चित्त कभी योग-युक्त नहीं हो सकता। जैसे श्रीमत है, अमृत वेले योग-अभ्यास करो परन्तु जो ऐसा नहीं करते, उन्हें कर्मयोग कठिन अवश्य लगेगा। इसलिए कर्म में शिव बाबा के साथ रहने के लिए उनकी श्री-

मत को शिरोधार्य करना परमावश्यक है। हमारे कर्म इतने श्रेष्ठ हों कि हमारे अन्तर मन से सुख की गहरी श्वासें आती रहें।

कर्म करते समय संकल्प

सर्वप्रथम तो हम जब भी कोई कर्म शुरू करें, शिव बाबा की याद के साथ करें—ये हमारा स्वभाव बन जाना चाहिए। हम यों ही जल्दी बाजी में कर्म को समाप्त करने के अभ्यासी न हों। इसका अर्थ यह नहीं कि हम कार्य धीमी गति से करते हों।

कर्म करते समय हमें ऐसी स्थिति रखनी चाहिए जो आपस में टकराव का वातावरण न हो। इसलिए कर्म में सभी के साथ सत्कार की भावना से रहना, सभी की राय को यथा उचित महत्व देना तथा सभी को हल्के रखना आवश्यक है। न हम किसी से भारी हों, न दूसरे ही हमसे भारी हों। नहीं तो ये असहयोग व अस्नेह का वातावरण कर्म को बन्धन अवश्य महसूस करायेगा।

हम कर्म में यह भी न सोचें कि मैंने ज्यादा काम किया या मुझे ज्यादा काम करना पड़ता है, दूसरे कम काम करते हैं। यह विचार नितान्त गलत है। क्योंकि हम काम नहीं करते, सेवा करते हैं अर्थात अपनी कमाई जमा करते हैं। इसलिए अधिक सेवा करके अधिक कमाई करने का उमंग मन में बना रहे। इसी तरह कभी ज्यादा कार्य दिये जाने पर भी भारी मन नहीं होना चाहिए बल्कि मन में यह खुशी रहे कि आज ज्यादा भाग्य निर्माण का अवसर मिला है। क्योंकि भारी मन योग-युक्त नहीं रह सकता। इस तरह हर प्रकार से स्वयं को हल्का रखने का अभ्यास करना चाहिए।

इसी प्रकार यदि अधिक कार्य होने पर सहयोग नहीं मिलता तो सहयोग की कामना की अग्नि भी मन में नहीं जलनी चाहिए, नहीं तो योग अग्नि नहीं जल सकेगी। क्योंकि इससे मन बड़ा ही विचलित हो जाता है। इसलिए कल्प वृक्ष के बीज परमात्मा को स्नेह रूपी पानी देने से सहयोग रूपी फल स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। माँगने से कुछ भी मिलता नहीं। योग-युक्त रहने से सब कुछ स्वतः ही मिल जाता है। इसलिए धैर्यता के अवतार बनकर शिव बाबा को याद में पूरी लग्न व शक्ति से कार्य में जुट जाना चाहिए तो ऐसे परमवीर को शिवबाबा स्वयं ही सहयोग देने दौड़ आते हैं।

कभी-कभी कर्म की जिम्मेदारी भी योग-युक्त नहीं रहने देती। परन्तु ईश्वरीय महावाक्य हैं—"मैं बच्चों को ज़िम्मेदारी देता हूँ, परन्तु जो बच्चे जिम्मेदारी मुझ पर नहीं छोड़ते, वो ज़िम्मेदारी निभाने में सफल नहीं होते"। इसलिए सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी सम्भालते हुए भी, बाबा के कन्धों पर ज़िम्मेदारी डालकर सदा स्वयं को निमित्त समझकर, फरिश्ते समान हल्के रहकर कार्यरत होना चाहिए।

कर्म में अभ्यास

ज़रा सोचो—हमें किसने यह कर्म दिया ? स्वयं भगवान ने। कितने श्रेष्ठ भाग्य हैं हमारे जो भगवान ने नई दुनिया बनाने के कार्य में हमें भी कुछ हिस्सा दिया। इस विश्व में करोड़ों आत्मायें केवल पेट पालने के लिए ही रात-दिन झूठ, कपट के धन्धों में व्यस्त हैं और हम सर्वश्रेष्ठ कार्य में अपनी अनमोल घड़ियाँ व्यतीत कर रहे हैं। इस प्रकार के विचार बहुत ही मग्न स्थिति बना देते हैं और न जाने कब व कैसे, कर्म और योग दोनों ही सफल हो जाते हैं।

अगर कोई आत्मा लौकिक कार्य में व्यस्त है या धन कमाने में व्यस्त है, तो उसे भी ईश्वर द्वारा दिया जानकर, सदा हल्के व उमंग में रहना चाहिए, तब ही स्थिति योग-युक्त रहेगी।

बहाव में न बह जाओ

किसी भी तरह के कर्म में, हमें दूसरों के बहाव में नहीं बह जाना चाहिए, बाह्य मुखी के साथ बाह्य मुखी नहीं बन जाना चाहिए। सदैव ये स्मृति दृढ़ रहे कि अन्य आत्माओं को तथा वातावरण को मुझे योग-युक्त बहाव में रखना है। मुझे सदा अप्रभावित होकर रहना है।

विचारों में परिवर्तन

भिन्न-भिन्न तरह के कर्म मिलने पर कभी-कभी मन भारी हो जाता है। परन्तु हर कर्म का आनन्द लो, जो हर कर्म को अपने आनन्द का साधन बना लेता है, वह कभी भी योग रहित नहीं होता। कर्म छोटा हो या बड़ा, ये भान निकाल देना चाहिए कि मैं ये कार्य क्यों करूँ। हर कर्म को आनन्द पूर्वक करने वाली आत्मा कर्मयोगी सहज ही बन जाती है। मान लो आपको कोई ऐसा कार्य दे दिया गया जिसमें आपकी रुचि न भी हो, तो उस कर्म में भी आनन्द लेने लगो तो योग भ्रष्ट नहीं होगा।

इसी प्रकार कर्म में गलती हो जाने पर या परिणाम विपरीत निकल जाने पर अपनी आनन्दित स्थिति को न छोड़ो। फट से अपने सोचने के तरीके को ज्ञान-युक्त मोड़ दे दो, समस्या को न सोचकर, समाधान ढूँढ़ लो तो योग टूटेगा नहीं। तात्पर्य यही है कि किसी भी परिस्थिति में हमारा मन भारी न हो।

कर्मेन्द्रियों में शीतलता

प्रसिद्ध है कि देवताओं के अंग-अंग शीतल होते हैं, उनकी हर कर्मेन्द्री सुगन्धित होती है। यह प्राप्ति योग द्वारा ही होती है। परन्तु देवता बनने से पूर्व कर्म योगी बनना आवश्यक है और भविष्य में जीवन के सर्व रस प्राप्त करने के लिए तथा इस समय ईश्वरीय रसास्वादनार्थ इस संसार के सभी रसों का त्याग मन से करना होगा।

अगर इस नश्वर विश्व का एक भी रस किसी कर्मेन्द्री का आधार है तो अतीन्द्रिय रस उतना ही कम हो जाता है। एक समय में एक ही रस मिल सकता है। चाहे कोई ईश्वरीय रस ले या साँसारिक रस···। मन रस तथा कर्मेन्द्रियों के रस, दोनों प्रतिकूल चीजें हैं। इसलिए हमें देखना होगा कि हमारी कोई भी कर्मेन्द्री किसी रस के अधीन तो नहीं है।

आँखें सदा सुन्दरता देखने के रस में रहना चाहती हैं। हम इस रस के गुलाम न हों। हम यह न भूलें कि जिस चेहरे पर आज सुन्दरता है, कल उस पर काली झुरियाँ होंगी। जो आज पूर्णिमा के चाँद की तरह बरबस हमारी आँखों को खींच रहा है, कल वह काल के अन्धकार में विलीन हो जायेगा। अगर हमारी ये आँखें रस लेने में ही मग्न होगी तो हमारा तीसरा नेत्र उस परम सुन्दर प्रियतम को नहीं देख सकेगा।

आँखें अगर इधर-उधर भटकेंगी तो मन भी चंचल हो जायेगा। पतित देह को देखने से पतित विचार आयेंगे और योग समाप्त हो जायेगा। इसलिए योग-अभ्यासी को इस नश्वर देह व देह के वैभवों को देखते हुए भी, न देखने का अभ्यास करना चाहिए।

कानों को सुनने का रस—कानों द्वारा व्यर्थ बातें सुनने में मन भी इतना क्षणिक रस लेने लगता है कि उसे अपने वास्तविक रस की विस्मृति हो जाती है। कानों के रस संगीत को ही जो मन रस का आधार समझते हैं वो सदा काल का मन रस प्राप्त नहीं कर सकते। इसके लिए सुनते हुए न सुनने का अभ्यास दृढ़ करना चाहिए। तब ही मान अपमान, निन्दा स्तुति के बोल भी विचलित नहीं करेंगे। अगर महिमा सुनने का रस होगा तो ग्लानि सुनकर एकरस नहीं रह सकेंगे।

मुख का रस बोलना—इसका ही रूप है बाह्य मुखता, जो कर्मयोग का महान शत्रु है। बल्कि मुख का रस हो मधुर वाणी व ईश्वरीय वाणी, तब ही कर्म योग में सफ़लता होगी।

जीभ रस का तो सारा संसार ही है। इसी के कारण संसार में हाहाकार है, अनेक समस्याएँ हैं। जो भोजन का सेवन शरीर को चलाने के लिए नहीं, बल्कि जीभ रस वश, अनेक वैभवों को कामना सहित करते हैं वे प्रयास करने पर भी कर्मयोगी नहीं बन सकते। इसलिए खाना, पीना, पहनना, ये केवल ईश्वरीय सेवा का आधार हैं, ऐसा समझकर जो योगी वैराग्य वृत्ति धारण करते हैं, वे ही कर्मयोगी का आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं। जो जितने रसों के अधीन होते हैं उनका मन उतना ही निर्बल होता जाता है और समय पर वे विघ्नों से विचलित हो जाते हैं।

इस प्रकार कोई भी क्षणिक रस, मन को नीरस करता है। इन सर्व रसों का भोग तो हम ८४ जन्मों तक करते ही रहेंगे। अब का त्याग हमारा श्रेष्ठ भाग्य बनायेगा। क्योंकि ये ईश्वरीय सुख न स्वर्ग में मिलेगा और न भक्ति काल में। सर्व प्राप्तियाँ होंगी, परन्तु शिव बाबा का साथ नहीं होगा। इसलिए जो अवसर भाग्य से प्राप्त हुआ है, उसका सम्पूर्ण लाभ उठाना चाहिए।

विभिन्न कर्मों में योग-अभ्यास

प्रत्येक कर्मयोगी सारे दिन में विभिन्न कर्म करता है। प्रत्येक कर्म में योग का भिन्न भिन्न रस लिया जा सकता है। मुमुक्षुओं के लाभार्थ कुछ अनुभव युक्त अभ्यास यहाँ प्रस्तुत हैं।

सवेरे उठते ही बाबा से गुड़ मॉर्निंग करके स्वयं को नशे में ले आओ कि मेरा सम्बन्ध किससे है और अपने परम प्रिय शिव बाबा से वार्तालाप प्रारम्भ कर दो, अशरीरी होकर बाबा के पास चले जाओ और बाबा से सुख, शान्ति आनन्द व पवित्रता के प्रकम्पन ग्रहण करो।

स्नान करते समय यह वार्तालाप स्वयं से करो कि मैं आत्मा इस देह रूपी मन्दिर की धुलाई कर रही हूँ। शेविंग करते समय—कि मैं इस मन्दिर के गुम्बद की सफेदी कर रही हूँ, तो बड़ा ही आनन्द आयेगा।

सुनते समय—शिव बाबा के ज्योति स्वरूप पर एकाग्र होने का अभ्यास करो कि मुझ पर शिव बाबा से शक्तियों की किरणें आ रही हैं और मैं आत्मा कानों द्वारा सुन रही हूँ।

देखते हुए—जो भी मनुष्यात्मा सामने आवे, उसकी भ्रकुटि में आत्मा देखने का अभ्यास करो कि मुझसे शक्तियों की किरणें निकल कर उस पर पड़ रही हैं या दूसरों को देखते हुए उनके प्रारम्भिक पवित्र स्वरूप या अन्तिम फरिश्ते स्वरूप को देखो।

लिखते हुए—शिव बाबा की याद में लिखना प्रारम्भ करो कि बाबा आप बोलो और मैं लिखूं। बड़ा ही अनोखा रस प्राप्त होगा। ऐसा ही अनुभव होगा कि सचमुच बाबा की स्पष्ट प्रेरणाएँ आ रही हैं। या ये अभ्यास करो कि मैं आत्मा इन हाथों द्वारा लिखा रही हूँ।

भोजन खाते व बनाते हुए—यह अभ्यास करो कि मैं किसके भण्डारे से खा रही हूँ। इस ब्रह्मा भोजन का कितना महत्व है। और मैं किसको भोग लगाने के लिए भोजन बना रही हूँ—कुछ इसी तरह के विचार स्थिति को बहुत ही आनन्दित कर देते हैं।

हाथों से कार्य करते हुए—जैसा-जैसा कर्म हो, वैसी-वैसी स्थिति का अभ्यास करना चाहिए। कभी इस स्थिति का अभ्यास करो कि मैं फरिश्ता, प्रकाश पुंज में हूँ और कार्य कर रहा हूँ। कभी अभ्यास करो कि मैं बाबा के पास हूँ और उसी की आज्ञानुसार कार्य कर रहा हूँ।

विद्यालय में पढ़ाते हुए—सामने बैठे हुए विद्यार्थियों को आत्मा देखने का अभ्यास करो। शुरू करने के पूर्व याद का अभ्यास करो। तथा शिव बाबा द्वारा बताई गई एक विशेष स्थिति का अभ्यास करो—"वाणी में आते हुए भी वाणी से परे रहने का अभ्यास", बोल हम यहाँ रहे हैं और बुद्धि से शिव बाबा के पास हैं।

घूमते हुए—प्रकम्पन (Vibrations) फैलाने का अभ्यास करो। मैं चल रहा हूँ, मेरे सिर पर प्रकाश पुंज है और मुझसे चारों ओर पवित्रता व शान्ति की किरणें फैल रहीं हैं।

इस प्रकार भिन्न-भिन्न कार्य में याद का अभ्यास करते रहने से मन शिव बाबा के पास रहने का अभ्यासी बन जाता है और तत्पश्चात् कर्म में जो आनन्द प्राप्त होता है, वह अनोखा ही है।

—:०:—

"कुछ भूली बिसरी यादों की झलकियां"

ब्रह्माकुमारी शुक्ला, जालंधर

बात आज से २५ वर्ष पूर्व की है। भक्ति पूजा में मेरी बहुत ही लगन थी। श्री कृष्ण जी की अनन्य भक्ति बचपन से ही मैं किया करती थी। अपने शहर का कोई भी मन्दिर तथा गुरुद्वारा ऐसा न था जहाँ मैं न जाया करती थी। जहाँ कहीं भी सत्संग होता हम वहाँ अवश्य ही पहुंच जाया करते थे। एक बार की बात है अमृतसर में निर्मल स्वामी जी का सत्संग हो रहा था। वहाँ पर मैं और मेरी लौकिक बड़ी बहन, दोनों ही लौकिक पिताजी के साथ सत्संग सुनने के लिये गये थे। वहाँ पर ही पहली बार ब्रह्माकुमारी बहनों का प्रवचन सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनके बोल ऐसे प्रतीत होते जैसे देवियों के मुख से फूल झड़ रहे हों। मेरे हृदय पर उनकी एक अमिट छाप-सी लग गयी। उस समय मैं बहुत छोटी आयु की थी। परन्तु दिल में प्रभु मिलन की चाह थी तथा सुना था कि बूढ़े तन में भगवान आते हैं। तो यही बार-बार इच्छा होती थी हम भी एक बार देखें कि बूढ़े तन में भगवान कैसे आकर ज्ञान सुनाते हैं। मिलन की एक तड़प-सी थी। कहते हैं कि जिसको चाह होती है उसे राह मिल ही जाती है। कुछ समय के पश्चात् ही मुझे मधुबन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मातेश्वरी तथा पिताश्री जी की विचित्र विभूतियों को देखकर लगा कि हमने इतनी देर भी क्यों लगायी क्यों न जन्म से ही हम बाबा के बन जाते। हमारे आने से पहले १४ साल बहनों ने जो तपस्या की, वह हम भी करते तो हर कल्प के लिये ड्रामा में नूंध हो जाती। परन्तु आज जब मैं साकार बाबा के साथ बीते दिनों की बातें नये-नये आने वाले भाई-बहनों को सुनाती हूँ तो उनके अन्तर्मन से यही आवाज़ निकलती है—"आप धन्य हैं, आप सौभाग्यशाली हैं कि साकार बाबा का प्यार लेने के अधिकारी बने। इस बात से मन में तसल्ली रहती है कि बाबा के प्यार लेने की नूंध कल्प-कल्प की हो गयी।

मेरे शुभचिन्तक बाबा

बाबा ने मुझे कई बार ट्रांस—दिव्य दृष्टि के दृश्यों—में भेजने की भी कोशिश की। मेरे साथ और कई जो मधुबन आते थे, वे बाबा को देखते ही ट्रांस में चले जाते थे। मैं ही थी कि देखती रह जाती थी। परन्तु योग में कशिश बहुत होती थी, ऐसा अनुभव करती जैसे एक दम कहीं हल्की फुल्की फ़रिश्तों की दुनियाँ में आ गयी हूँ। कई बार बाबा कहते बच्ची सुबह तीन बजे नहा धोकर आना। बाबा तुम्हें ट्रांस में भेजेगा, बहुत कोशिश करने के बावजूद भी मैं ट्रांस में तो जाती नहीं थी परन्तु योग इतना शक्तिशाली होता था कि मैं कहां बैठी हूँ अपनी सुध बुध भूल जाती थी। कई बार बाबा को मैं हंसकर कहती बाबा मेरी आत्मा बहुत भारी है इसे ऊपर खिचने के लिये रस्सी नहीं मोटा रस्सा चाहिए तो बाबा प्यार से देखते और मुस्कुराते। परन्तु अभी ट्रांस में न जाने का भी रहस्य मालूम पड़ता है कि जो साकार में बाबा के चरित्र देखे, खेले वे आज दिन तक भी मेरे हृदय पर अंकित हैं अगर ट्रांस में देखती तो शायद एक सपना ही बन जाता। जो भगवान के साथ पल-पल के दिन बीते, सुख लिया, शिक्षा ली वह कभी भी भुलाये नहीं भूल सकती।

कन्याओं को ऊँचा उठाने वाले बाबा

इसी प्रकार, एक बार बाबा अमृतसर में आये हुए थे। वहाँ पर कुछ ऐसी कन्याएँ थीं जो अपना रुहानी जीवन बनाना चाहती थी, परन्तु घर का बन्धन था। बाबा ने राय दी सबके लिये सिलाई स्कूल खोल

कलकत्ता मे आध्यात्मिक संग्रहालय में कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायधीश भ्राता शम्भूचरण घोष स्नेह और पवित्रता की सूचक राखी बंधवाने के पश्चात् शिव बाबा की स्मृति में स्थित हैं। ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी उनको योग की दृष्टि दे रही हैं

पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायधीश राखी बंधवाने के पश्चात् अपने परिवार सहित ब्र० कु० निर्मल पुष्पा, तथा अन्य पटना के भाईयों के साथ खड़े हैं।

पटना हाई कोर्ट के जस्टिस भ्राता एस० सरवरअली ब्र० कु० निर्मल पुष्पा से 'पवित्रता और स्नेह की सूचक' राखी बंधवाते हुए प्रसन्न मुद्रा में। साथ में पटना के भाई बहन उपस्थित हैं

कर्नाटक के मुख्य न्यायधीश भ्राता चन्द्रशेखर जी को ब्र० कु० सरला बहन पावन राखी बांध रही हैं। साथ में ब्र० कु० सरोजा हैं

उन्ना सेवा केन्द्र की ओर से हिमाचल प्रदेश के स्वास्थ्यमन्त्री भ्राता रंगीलाराम राव तथा विधान सभा के सदस्य भ्राता रामनाथ जी को राखी बांधने के पश्चात् ब्र० कु० गीता "ब्रह्मचर्य सभी समस्याओं का हल है" यह ईश्वरीय सन्देश सुना रही हैं। साथ में कांग्रेस (आई) की प्रधान तथा ब्र० कु० रामचरण जी बैठे हैं।

रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर बम्बई हाईकोर्ट के मुK न्यायधीश भ्राता पी० एस० देशपाण्डे जी को राखी बांO हुए ब्र० कु० निर्मलाजी

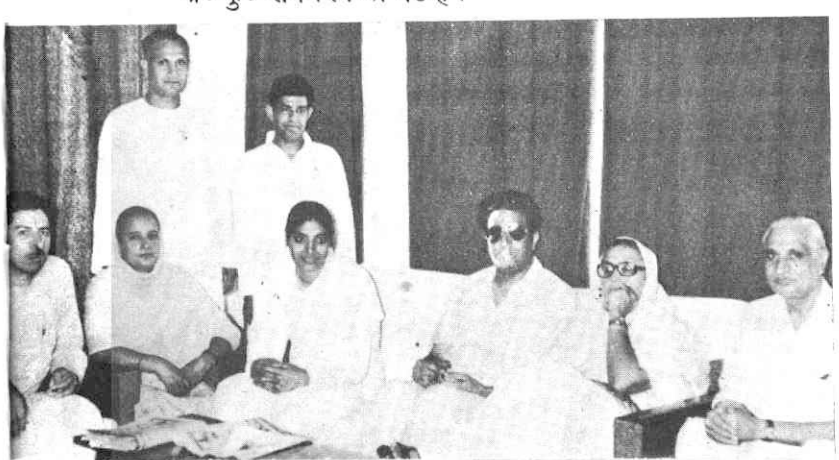

ब्र० कु० सरोज न्यायधीश भ्राता तरुन कुमार बोस को राखी बांधते हुए

ब्र० कु० कानन कलकत्ता हाई कोर्ट के न्यायधीश भ्राता बिमल बसक को पावन राखी बांधते हुए

नारनौल में ब्र० कु० आभा जी महेन्द्रगढ़ ज़िला के सेशन जज भ्राता आई. सी. वशिष्ट को राखी बांधते हुए

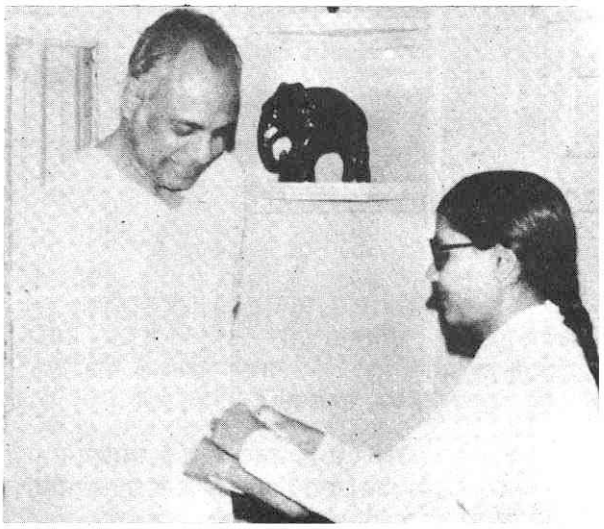

ब्र० कु० सरला जी ऊपर चित्र में मेहसाना ज़िला सैशन जज भ्राता प्रवीण सिंह चौहाण जी को राखी का सन्देश सुनाकर राखी बांध रही हैं तथा नीचे चित्र में संयुक्त ज़िला न्याय-धीश भ्राता परीख जो को आत्म स्मृति का तिलक दे रही हैं

भिवानी में सैशन जज भ्राता बी० के० कुशाल जी तथा उनकी धर्मपत्नि को ब्रह्माकुमारी अनोखी तथा नारायणी जी राखी बांध रही हैं

बसवन बागेवाडी सेवा केन्द्र में पधारे मुनसिफ़ भ्राता एस. मरियप्पा को ब्र० कु० श्यामला जी राखी बांध रही हैं

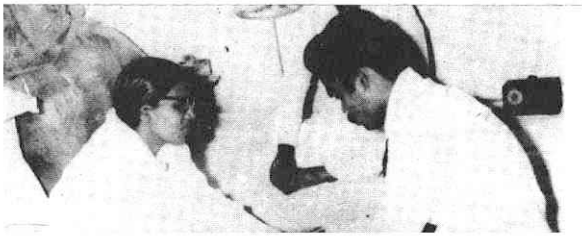

जालन्धर में रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर ब्र० कु० राज जी लाल्म जगतनारायण भूतपूर्व संसद सदस्य एवं भूतपूर्व प्रमुख सम्पादक दैनिक हिन्द समाचार समूह प्रकाशन जालन्धर को राखी बांधरही हैं। थोड़े दिन पूर्व ला० जी शहीद हो गए

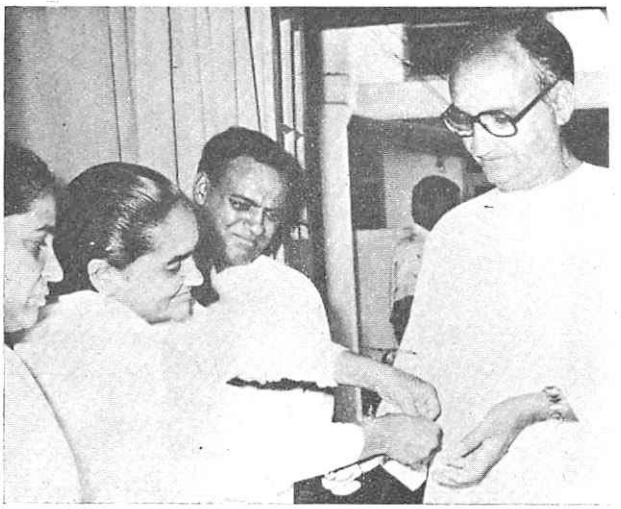

राखी के पावन दिवस पर ब्रह्माकुमारी राज दैनिक पंजाब केसरी एवं हिन्द समाचार प्रकाशन समूह के मुख्य कार्यकारी तथा भूतपूर्व सदस्य पंजाब विधान सभा भ्राता रमेश चन्द्र जी को राखी बांध रही हैं। उनके निकट ब्र० कु० आनन्द जी तथा ब्र० कु० राजकुमारी खड़ी हैं

जन्माष्टमी के अवसर पर सम्बलपुर सेवा केन्द्र पर पत्रकार सम्मेलन हुआ। पत्रकार शिव बाबा की याद में बैठे हैं

ब्र० कु० सुनन्दा जी "संयुक्त कर्नाटक" के सम्पादक भ्राता सुरेन्द्र दानी को तथा ब्र० कु० निर्मला जी भ्राता नाज़र "संयुक्त कर्नाटक" सम्पादक हुबली को राखी बांध रही हैं

रायपुर में रक्षा बन्धन के अवसर पर आयोजित सम्मेलन में ब्र० कु० शीला प्रवचन कर रही हैं। पास में बैठ हैं मुख्य अतिथि भ्राता गोविन्दलाल वोरा जी (सम्पादक दैनिक नव भारत) एवं ब्रह्माकुमार नरेन्द्र गर्ग

कलकत्ता स्थित आलइन्डिया रेडियो के पूर्वी क्षेत्र के डिप्टी जनरल डायरेक्टर भ्राता स्वामीनाथन को "पवित्र बनो योगी बनो" की पावन राखी ब्र० कु० कानन बांध रही हैं, ब्र० कु० शीला, गीता तथा राजकुमार भाई दिखाई पड़ रहे हैं

भरूच सब जेल में ब्र० कु० सुनिला नै कैदियों को "पवित्र बनो, योगी बनो" का सन्देश लिये राखी बांधी । साथ में वहां के जेलर खड़े हैं

ब्रह्माकुमारी शोभा नागपुर मध्यवर्ती कारागृह में कैदियों को राखी बांधने के पश्चात भ्राता डी. जे. चौधरी जेल सुपरीटैन्डन्ट को राखी बांध रही हैं

सोनीपत सुधार घर (जेल) मे स्टाफ़ तथा कैदियों के साथ रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर ब्र० कु० जनक तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई बहनें बैठे हैं

होशियारपुर में ब्र. कु. सुषमा वहां के डी. एस. पी. भ्राता आर. एम. जस्सी को 'पवित्र बनो योगी बनो' की राखी बांधते हुए

कानपुर किदवई नगर सेवा केन्द्र पर पधारे परिवेक्षण केन्द्र बालजेल अधीक्षक को उनकी पत्नी सहित ब्र. कु. दुलारी राखी बांध रही हैं । साथ में ब्र. कु. सरिता, ब्र. कु. रामचन्द्र तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहन बैठे हैं

अजमेर ज़िला के पुलिस सुपरिन्टेन्डेंट भ्राता अशोक भण्डारी को राखी बांधते हुए ब्र. कु. अनुराधा जी, पास में ब्र. कु. सरोज खड़ी हैं

दिया जाय। उन दिनों मैं सिलाई की ट्रेनिंग लेकर आयी थी। सो बाबा ने मुझे वहाँ ट्रेनिंग क्लास कराने के निमित्त रखा। दोनों ही क्लास वहाँ नियमित रूप से चलने लगीं—सिलाई तथा ज्ञान योग की। कैसे प्यारे बाबा अपनी कन्हैय्या की प्यारी कन्याओं का कितना ध्यान रखते थे। मुझे बुनाई का बहुत शौक था। सो एक बार बाबा के लिये स्वेटर, जुराबें तथा टोपी बुनकर भेजी। टोपी का राऊँड थोड़ा बड़ा हो गया था तो बाबा ने मुझे पत्र लिखा —"बेटी आदि देव इतना बड़ा तो नहीं है ? वह लाल अक्षरों वाला पत्र क्या था कि मेरे प्राण ही थे।"

मैं स्कूल कार्य करने में बहुत चुस्त फुर्त थी। यज्ञ के प्रति जिगरी स्नेह होने के कारण हर कार्य बड़े प्रेम से करती थी। सो साकार बाबा के साथ रहने का भी मुझे काफी अवसर मिला। एक बार हम शरीक किसी कन्या ने ईष्या वश होकर मुझसे आकर कहा—बाबा तुमसे बहुत नाराज़ हैं, तुम बाबा के दिल से उतरी हुई हो। यह सुनकर मेरे दिल में एक धक्का सा लगा। जिस भगवान को जन्मों से तड़प-तड़पकर पाया, वह भगवान, मेरा बाबा ही मुझसे रूठ जाये तो मेरा इस दुखभरी कलियुगी दुनिया में एक पल भी जीना बड़ा मुश्किल था। ऐसे तो भक्ति में भी बहुत बार पुकार-पुकार कर कहा—हे प्रभु ! चाहे सारी दुनिया रूठ जाये पर तुम न रूठना। मैं तुरन्त ही बाबा के पास गयी। मैंने बाबा से रो-रोकर पूछा—"बाबा आप मेरे से रूठे हुए हैं ? ऐसे मैंने सुना है।" तो बाबा ने कहा—"बच्ची जिसने तुमसे कहा है उसी से रूठा हूँ। मैंने तुमसे कब कहा कि मैं तुमसे रूठा हूँ, जब मैं कहुंगा तब मानना।" उस बात से लगा कि जिस मात-पिता के हम बने वह मीठा प्यारा बाबा हमारे नयनों से, मस्तक से, दिल से कभी दूर न हो।

स्नेह मूर्त बाबा

बात उस समय की है जब कि हम रूहानी सेवा में लगे, तो पहली बार कुछ लोगों को लेकर मधुबन गयी, तो स्नेह मूर्त बाबा ने कहा—"मम्मा, यह बच्ची पहली बार पण्डा बनकर आयी है तो जैसे लड़की की शादी होती है तो उसका पहला त्यौहार धूमधाम से मनाते हैं, इसे भी सर से पांव तक खूब सजाकर भेजना।" इस प्रकार बाबा हर रीति आगे बढ़ाने की युक्तियाँ बतलाते थे।

बुद्धिवानों के भी बुद्धिवान मेरे बाबा

बाबा जब किसी ब्रह्माकुमारी द्वारा लाये ग्रुप से मिलते थे, बाबा बच्चों की राजी खुशी पूछते समय कहते थे—"बच्ची। फूल लायी हो, कलियाँ लायी हो, या डोडी लायी हो ?" मेरे बाबा बुद्धिवानों के बुद्धिवान थे। वे हम अल्पज्ञ बुद्धि वालों की बुद्धि की कली खोलते थे। बाबा देखते थे कि ये बच्चियाँ छोटी हैं, इनमें इतनी परख बुद्धि नहीं है। चाहे २० का ग्रुप हो या ३० का, बाबा सेकेण्ड में देखते ही बता देते थे मानो कि वे पहले से ही जन्म पत्री जानते हों। यह बच्चा चलने वाला है, यह कुछ देर बाद नहीं चलेगा, इसका भविष्य कितना ऊँचा है– बाबा, के मुख से जो महावाक्य निकले वे जीवन में वरदान बनते रहे, जिन्हें हम वर्ष-भर तक न पहचानते थे, बाबा उन्हें पल में पहचान जाते थे।

बाबा हमेशा कहते "बच्चे जैसे किसी का कोई खानदानी हकीम होता है तो परिवार में किसी भी सदस्य को तकलीफ होने पर वे निःसंकोच होकर उसका दरवाज़ा खटखटाते हैं, उसी प्रकार मैं भी आपका रूहानी फैमली डाक्टर हूँ; आपको कोई भी आत्मिक रोग हो, कोई समस्या हो आप मेरे पास आ सकते हैं। इसी प्रकार, बाबा सभी के दिल का हाल पूछकर, सभी को हर प्रकार की राहत देते। इतना सुखदायी बाबा जो सदा ज्ञान-रत्नों से सबकी झोली भरने वाले, इतना ही नहीं जैसे पारस के साथ लगने से पत्थर भी सोना हो जाता है अथवा सच्चे चन्दन के निकट के वृक्ष भी अपने में सुगन्ध लेकर देने लगते हैं, ऐसे प्यारे बाबा को एक पल भी कैसे भूला सकते हैं।

—:•:—

सतयुग और एक भाषा

ब्र० कु० रमेश, गामदेवी

ता: २-१-१९८० की खुशनुमा शाम थी। मधुबन में प्यारे शिवबाबा की पधरामनी हुई। अनेक आत्माएं साकार में व्यक्त मिलन मनाने के लिये उपस्थित थीं। शिवबाबा अपने साकार रथ द्वारा अव्यक्त मुरली सुना रहे थे। उस दिन, आनेवाली सतयुगी दुनिया की झलक या झांकी शब्दों द्वारा वर्णन कर रहे थे। उसी बीच मैंने प्रश्न पूछा "बाबा सतयुग में भाषा कौन सी होगी?" अन्य आत्माओं ने भी साथ दिया और अपनी मीठी दृष्टि देते हुए बाबा बोले—

"भाषा तो यही बहुत शुद्ध हिन्दी ही होगी। हर शब्द वस्तु को सिद्ध करेगा।"

मीठे बाबा के इन महावाक्यों ने हमें सतयुग की भाषा के बारे में एक नया दृष्टि बिंदु दिया।

भाषा क्या है? उसकी क्या ज़रूरत है और अगर एक भाषा है तो वह कौनसी भाषा होगी और किसने इस एक भाषा की स्थापना की? ऐसे कई प्रश्न हैं। विश्व में कोई जीवात्मा त्रिकालदर्शी नहीं है। इसी कारण सब बातों के आदि, मध्य और अंत का ज्ञान उन्हें नहीं है। इस अल्पज्ञता के कारण, अनुमान के आधार पर तथा अपने संस्कार आदि के आधार पर, अनेक मतें, हर क्षेत्र में विविध प्रकार के विशेषज्ञों (Experts) ने अनेक सिद्धांत और विचारधाराएं बनाई हैं। ये विचार धाराएं अपूर्ण हैं और इसी कारण उन्होंने कई नई भ्रांतियाँ उत्पन्न की हैं। भाषा का क्षेत्र भी इसी तरह से भ्राँतियों से भरा हुआ है। शिवबाबा ने सरल शब्दों में भाषा के बारे में एक सिद्धांत सुनाया कि भाषा का कार्य है भाव को स्पष्ट करना। परन्तु आज की सृष्टि में भाषा एक प्राण प्रश्न बन गया है। भाषा के साथ-साथ अनेक प्रकार के सिद्धांतों का प्रचार भी भाषाविद करते हैं।

भारत में भाषा के विविध प्रश्नों की जानकारी सबको है। भाषा के कारण भारत के अनेक राज्यों की पुनर्रचना हुई। इसी विचार से कि भाषा के आधार पर पुर्नगठित किये गये राज्यों से देश में समाधान और शाँति की लहर फैलेगी। परन्तु उनके द्वारा नये प्रश्न उत्पन्न हुए। राज्यों की सीमाओं के प्रश्न उपस्थित हुए। भाषा के आधार पर द्वेष उत्पन्न हुआ। मेरी भाषा, तेरी भाषा के झगड़े, जैसे मेरा धर्म, तेरा धर्म के झगड़े के प्रश्न थे, वैसे प्रश्न उत्पन्न हुए। साथ-साथ एक राज्य में अन्य राज्य की भाषा के अल्प संख्यावालों के हित की सुरक्षा का प्रश्न उत्पन्न हुआ। राज्य सरकारों ने अपने-अपने राज्य की भाषा के प्रचार अर्थ कई प्रकार की योजनाएं बनाईं। न्यायालयों (Court) में भी स्थानिक भाषा का माध्यम हो—ऐसा सोचा गया।

भारत में पिछले ३१ वर्षों से सबसे बड़ा प्रश्न राष्ट्र-भाषा का उपस्थित है। एक राष्ट्रभाषा कैसे प्रचलित हो तथा सबके हित का ध्यान कैसे रखा जाए और सबको एक राष्ट्रभाषा के सूत्र में कैसे बांधा जाए?—यह एक बड़ी समस्या है। संयुक्त राष्ट्र के मच पर राष्ट्रभाषा में भाषण करने का पुरुषार्थ जब एक विदेश-मंत्री द्वारा होता है तब भारत सरकार का ४-५ लाख रु० खर्च हो जाता है। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रस्थापित करने के लिए पुरुषार्थी अपने बच्चों आदि को अंग्रेज़ी भाषा में अभ्यास कराते हैं। यह एक बड़ा विरोधाभास (Paradox) है।

विदेशों में भी अनेक भाषाओं के कारण समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। केनेडा के मान्ट्रीअल (Montreal) शहर में अंग्रेजी तथा फ्रेंच भाषा के कारण आपस में झगड़े (Riots) हुए हैं। इंग्लेंड और अमेरिका के बारे में कहा गया है कि एक ही भाषा द्वारा विभाजित

ये दो बड़े देश हैं (England USA are two countries divided by one language) इस समय इग्लैंड में प्रचलित अंग्रेज़ी भाषा में संशोधनार्थ २५ कोटि पौंड का एक सुझाव थोड़े समय पहले ब्रिटेन में रखा गया था और यह भी समाचार है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में अरबी भाषा को छठी भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त कराने के लिये अरबों रुपयों का खर्च होने वाला है।

आज के विश्व में इस तरह के भाषा के भूत के कारण उत्पन्न हुए प्रश्नों पर जब हम विचार करते हैं तब सतयुगी विश्व के बारे में बताये गये एक भाषा के प्रश्न पर भी हम सोच सकते हैं। भाषा भाव का माध्यम नहीं परन्तु भाषा पारस्परिक असंतोष, भेद, ईर्ष्या, झगड़े आदि का माध्यम बन गई है। इससे सिद्ध होता है कि जब तक इस विश्व में अनेक भाषाएं हैं तब तक शांति, प्रेम और समाधान का वातावरण नहीं बन सकता। सतयुग, अर्थात जहाँ शत-प्रतिशत (१००%) सुख, शांति, आनंद इत्यादि हैं। तो ज़रूर वहाँ एक भाषा चाहिये। और इसी आधार स्तंभ (Foundation) पर ४ बातें त्रिकालदर्शी शिवबाबा ने हमें बताई कि वहाँ पर एक धर्म, एक राज्य, एक परिवार और एक भाषा होगी। यह एक धर्म, वर्तमान ईश्वरीय ज्ञान से, एक राज्य वर्तमान राजयोग द्वारा, एक परिवार रूपी संस्कृति आज के ईश्वरीय धारणाओं द्वारा, तो एक भाषा वर्तमान में शिव बाबा द्वारा उच्चारे महावाक्यों के माध्यम द्वारा होगी अर्थात वर्तमान मुरलियाँ भविष्य की एक भाषा का बीज हैं।

शिव बाबा ने भाषा के क्षेत्र में बहुत ही बड़ी क्रांति की है और यह क्रांति अहिंसक क्रांति है। जिस तन में उन्होंने प्रवेश किया उस ब्रह्मा बाबा की मातृ-भाषा हिंदी नहीं थी। परन्तु शिवबाबा ने अपने माध्यम रथ की भाषा परिवर्तित कराके हिंदी भाषा में हैदराबाद और कराची में ज्ञान देना शुरू किया। वक्ता और श्रोता सबकी भाषा आरम्भ में सिंधी थी परन्तु फिर भी मुरली शुरू से हिंदी में ही सुनाई गई और इस तरह शिव बाबा ने बड़े प्रेम से सबको हिंदी भाषा सिखलाई। भाषाएं सिर्फ भाव को स्पष्ट करनेवाला माध्यम है, यह सिद्ध करने के लिये शिव बाबा ने सिंधी, पंजाबी, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेज़ी आदि-आदि भाषा के शब्दों का उपयोग किया, अर्थात शिव बाबा के इस भाषा के प्रयोग के कारण अनेकों ने हिन्दी ही नहीं बल्कि अनेक भाषाएं सीखीं। इस बात को सिद्ध करने के लिये हमारे यहाँ हज़ारों उदाहरण हैं।

कल्याण कारी बाबा से सीखा गया विविध भाषा प्रयोग

ऐसे ही एक व्यक्ति (Example) का मैं यहाँ विवरण करता हूं। वर्तमान समय पांडव भवन में स्थित इशु बहन तथा लच्छु बहन के लौकिक माँ-बाप, बहन भाई आदि सब पहले संपूर्ण समर्पित थे और आबू में ही रहते थे। बाद में उनके भाइयों की लौकिक पढ़ाई आदि के लिये उन्हें आबू से बाहर निकल कल्याण (बंबई के पास) में जाकर रहना पड़ा। दोनों भाइयों को स्कूल में दाखिल कराने के लिये उनकी माता कलाबहन एक स्कूल में गई। तब उन्हें प्राचार्य ने बताया कि उनके बच्चों के लिये, कोई खाली स्थान नहीं है क्योंकि वे स्कूल में प्रवेश लेने के लिये बहुत देरी से आये हैं। पाठशालाएं जून मास में खुल गई थीं और वे अगस्त मास में प्रवेश लेने के लिये गये थे। तब कलाबहन ने ईश्वरीय ज्ञान द्वारा सेवा करने के लिये ज्ञान की कई बातें सुनाईं और उसमें Incognito, Salvation Army, Golden age, Silver—Copper—Iron ages, Confluence age, Incarnation आदि-आदि अनेक शब्दों का प्रयोग किया। ऐसे अंग्रेज़ी शब्दों का उपयोग तो बहुत विद्वान वक्ता ही कर सकता है। ऐसे शब्द प्रयोग से प्रभावित होकर तुरन्त ही प्राचार्य ने सोचा कि ऐसी विदुषी माता को 'ना' कैसे कहा जाए। प्राचार्य ने स्वयं ही प्रवेश पत्र भर दिये और कहा कि 'बहन जी, आप इस प्रवेश पत्र पर हस्ताक्षर कीजिये।' तब कला बहन ने कहा कि महाशयजी, मैं अंगूठा लगाती हूं।

अर्थात इस तरह शिव बाबा ने एक अल्पज्ञ माता की भाषा को विद्वान की भाषा में परिवर्तित किया।

ऐसे ही अपनी एक ब्रह्माकुमारी पुष्पाल बहन पश्चिमी जर्मनी में हेंबर्ग सेवा केन्द्र पर सेवा अर्थ उपस्थित हैं। वहाँ की स्थानीय भाषा पुष्पाल बहनजी जानती नहीं है। स्वयं सीख रही हैं। जब मुझे अपने हेंबर्ग के बहन-भाई पिछली विदेश यात्रा के समय फ्रेंकफर्ट में मिले तब मैंने एक वकील की तरह वहाँ के बहन-भाइयों की जांच करने के लिये उनसे पूछा कि पुष्पाल बहन, जिन्हें आपकी भाषा नहीं आती उन्हें बदली करके अन्य कोई बहन को भेजें? तब सबने एक ही आवाज़ और भाषा में दिल से कहा कि "नहीं, नहीं, पुष्पाल बहन तो हमारी बहन नहीं, माँ हैं।" उनकी आंखों की भाषा से हम उनसे ज्ञान पालना ले रहे हैं। आप कोई अनुभवी बहन को भले ही भेजें परन्तु पुष्पाल दीदी को कभी भी बदली नहीं करना। इस वर्ष देहली महायज्ञ में जब वहाँ के बहन भाई देहली आये तब सब पुष्पाल बहन के लौकिक परिवार के पास रुहानी प्रेम के नाते मिलने गये और अपने अपने दिल की अनेक बातें अनुभव के रूप में बताईं। ऐसे कई उदाहरण हैं। ऐसे अनुभवों, उदाहरणों का यदि हम संग्रह करें तो एक पुस्तक बन जाएगी।

आज जब विदेशी बहन-भाई मुरली सुनते हैं तो वे बाबा की मुरली उसी (origional) स्वरूप में सुनना चाहते हैं और इसीकारण हिन्दी भाषा सब प्रेम से सुनते हैं। तथा सीखने का पुरुषार्थ करते हैं, परिणाम स्वरूप हमारी डेनीज़ बहन (Sister Denise) इत्यादि कई बहनें हिंदी से अंग्रेज़ी में तुरन्त ही भाषांतर (Instant Translation) करती हैं। इन मुरलियों के कई शब्द, जैसे कि अव्यक्त-सिक्कीलधे-बापदादा-याद प्यार-मुरली आदि-आदि सर्वमान्य शब्द बन गये हैं। विदेशी भाई-बहन जब "बाबा, तेरा बनने में..." या "योगी बनो—ज्ञानी बनो" आदि गीत गाते हैं तो स्थानिक बहन-भाइयों को इतना हर्ष होता है जितना कि बहुत नामी-ग्रामी व्यक्तियों द्वारा सुनने से नहीं होता। दादी-दीदीजी (आदि) कर्नाटक में जब नैन पीड़िया, चना गिदरा-आदि-आदि शब्द बोलते हैं तब सबके मुख हर्ष से प्रफुल्लित हो जाते हैं। या तो जब साकार मुरली में सुनंतो, कथति, बनंति भागंती—ये शब्द सुनते हैं तब संस्कृत के पंडितों को शायद ये अशुद्ध संस्कृत लगे परन्तु ओरिसा की ओरिया भाषा जानने वालों को अपनी भाषा के शब्द मीठे ही लगते हैं।

आज भी बालबोध लिपी को देवनागरी लिपी (Script) कहा जाता है। शिव बाबा ने जब यह ज्ञान की बात बताई तब हमें इस 'देवनागरी' शब्द का ज्ञान हुआ। देवनागरी अर्थात जब देव (देवी-देवताएं) इस सृष्टि पर नागरिक के रूप में अपना जीवन व्यतीत करते थे तब उनकी जो लिपी थी वह है यह 'देवनागरी' लिपी। उसी तरह से ब्राह्मी भाषा और लिपी के बारे में कई उल्लेख पुरातत्ववादी बताते हैं। ब्रह्मा तन के माध्यम द्वारा सुनाई गई भाषा का यादगार शब्द शायद यह "ब्राह्मी भाषा" हो सकता है।

सतयुग की एक भाषा से अन्य सभी भाषाएँ

शुरू में शिव बाबा विविध संदेशियों के तन में सतयुग के विविध—प्रथम, द्वितीय या अन्य राज्य गद्दियों से संबंधित—समय की आत्माएँ भेजते थे। उन सब विविध-भाषा संस्कारों वाली आत्माओं द्वारा वहाँ की उस समय की भाषा के शब्द प्रयोग होते थे। दाँतों को साफ करने के साधन को (Tooth Brush) 'मुख-चमकीली', दासी को कांता, ऐसे अनेक नये शब्दों का प्रयोग वे आत्माएँ अपने अविनाशी संस्कारों के आधार पर करती थीं। ऐसे शब्द प्रयोगों के बारे में यदि विशेष संशोधन (Research) किया जाए तो मालूम पड़ेगा कि सतयुगी दैवी दुनिया में एक भाषा कैसी थी—कितनी मीठी थी। ये शब्द-प्रयोग शब्द-प्रमाण के स्वरूप में एक भाषा के ईश्वरीय सिद्धान्त की पूर्ति करेंगे। उसी के आधार पर विश्व की प्राचीन भाषा और उनसे उत्पन्न हुई सब भाषाओं का इतिहास वास्तविक रूप में लिखा जाएगा। संस्कृत, टीब्रु, लेटिन आदि भाषाओं का उद्गम स्थान तथा समय

भी उसी से सिद्ध होगा। इस आदि भाषा के विविध शब्दों का प्रयोग कैसे आज भी दुनिया की सभी भाषाओं में है, यह भी एक गुह्य राज़ है। 'नगारा' शब्द हिंदी, गुजराती आदि यहाँ की भाषाओं में है तो रशिया की स्लाई भाषा में और कीनिया—पूर्व अफ्रीका (Kenya—East Africa) की स्वाहीली भाषा में भी है। ग्रीक पुराणों के देवता हरक्यूलेस—हरे कृष्ण शब्द का, इटाली की राजधानी रोम—राम का, वेटोकन—वाटिका शब्द का अपभ्रंश हैं।

अमेरिका में स्थित मेसच्युट्स रीसर्च इंस्टीट्यूट के झेकोस्लोवियन डॉ० स्टेनोलीस झोरोक ने मार्जुआना, एल-एस-डी, आदि मादक द्रव्यों के प्रयोग से अपने भूतकाल में जाने वाली या प्रो० हरार आदि द्वारा हिप्नाटिझम आदि के प्रयोग द्वारा अपने भूतकाल को जागृत करने वाली आत्माएँ जब बहुत पूर्वकाल के संस्कार जागृत करती हैं तब वे आत्मायें भारत की प्राचीन भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करती हैं, ऐसा उन्होंने बताया है।

शिव बाबा द्वारा बताये गये भाषा के बारे में इन रहस्यों पर, या उन द्वारा भाषा के इतिहास के बारे में विश्व की सब राज्य-सरकारें या विश्व-विद्यालय संशोधन करें तो किसी भी प्रकार के पूर्वग्रह या अपने देश प्रेम के सिवाय, निःस्वार्थ किये गये भाषा के इतिहास का पुनःलेखन एक नई प्रेरणा का दाता बनेगा।

भाषा के क्षेत्र को एक अन्य बात पर भी विचार करना ज़रूरी है। वाल्मीकि रामायण के प्रारम्भ में एक कथा है कि एक शिकारी ने क्रौंच पक्षी का शिकार किया। तड़फते पक्षी को देखकर बाल्मीकि के मुख से 'मा निषाद' वाला अनुष्टुप छंद के श्लोक का उच्चारण हुआ। उसी कारण वहाँ ब्रह्माजी प्रगट हुए और बाल्मीकि को आदेश किया कि आज इस श्लोक के कारण आप आदि-कवि बने हो तो आप भगवान रामचंद्र की जीवनकथा को कविता के रूप में लिखो। परन्तु क्या बाल्मीकि जी आदि कवि हैं? हमारे पास नये विश्व की रूपरेखा का सर्जन शिव बाबा द्वारा हो रहा है और उन्होंने ब्रह्मा तन का माध्यम लिया है। हमारे यहाँ आज भी ब्रह्मा बाबा के पूर्वकाल के रिश्तेदार उपस्थित हैं। मैंने उन्हों से पूछा था कि क्या ब्रह्मा बाबा ने पूर्वकाल में कविता रची थी? तो उत्तर मिला था 'नहीं'—वे तो बड़े व्यापारी थे। परन्तु जब वे विश्व परिवर्तन के कार्य के माध्यम बने तो उन्होंने उसी समय अनेक गीत रचे। इन गीतों में कई बातें तथा शक्तियाँ भरी थीं। अनेकों को इन गीतों द्वारा साक्षात्कार आदि हुए। उस समय इन गीतों का विविध प्रकार का प्रभाव था। मेरे व्यक्तिगत विचार में इन गीतों के रचयिता के कारण पिताश्री को सिर्फ आदि-देव ब्रह्मा नहीं परन्तु आदि-कवि ब्रह्मा भी कह सकते हैं। क्योंकि उन गीतों द्वारा भी विश्व के आदि-युग की नींव (Foundation) पड़ी। इन तेजस्वी, शक्तिशाली गीतों पर यदि हमारे बुद्धिजीवी सुशिक्षित बहन-भाई विशेष अभ्यास करें और संगीत क्षेत्र के हमारे बहन-भाई यदि इन गीतों का संगीत द्वारा स्वर संकलन (Recording) करायें तो हमारे नये बहन-भाइयों को कई प्रकार की प्रेरणाएँ मिलें और विश्व को भाषा क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण मिले कि आदि-कवि और आदि-देव ब्रह्मा है।

आज भाषा के शब्दों का अनेक प्रकार का अर्थ हो गया है। अनेक अर्थ का कारण भी यह है कि एक शब्द के अनेक प्रकार के अर्थ किये हैं। अहम् सो-सोऽहम्, अहं ब्रह्मास्मि, आदि-आदि शब्दों के सच्चे अर्थ शिव बाबा ने हमें अभी बताये हैं। मैं पंजाबी हूँ, इस भाषा शब्द के प्रयोग का अर्थ यह नहीं कि मैं पंजाब हूँ—यह शब्दार्थ नहीं परन्तु उसका अर्थ है मैं ब्रह्म (ब्रह्मलोक-मूलवतन) का निवासी हूँ। अहम् सो-सोऽहम् अर्थात् हम परमात्मा और वह परमात्मा मैं हूँ—ऐसा नहीं परन्तु हम वह देवता थे। अर्थात भाषा के शब्दों का यथार्थ ज्ञान द्वारा, शास्त्र विद्वान आदि के क्षेत्र में शिव बाबा ही अनेक बातें बता सकते हैं।

भाषा की सामर्थ्यता के साथ-साथ ज्ञान की गुह्यता पर विचार करना ज़रूरी है। यह वर्तमान में दिया गया ज्ञान फिर से भविष्य में श्रीमद्भागवत गीता का

रूप धारण करेगा। इन मुरलियों की भाषा में जो बल है, साहित्य, शैली, शब्द-चातुर्य है यह भी एक आश्चर्य की बात है। एक भाषा के शब्दों तक सीमित यह भाषा नहीं है। ज़ीरो (Zero) से हीरो (Hero) बनना है। ऐसा कह करके हिंदी एवं अंग्रेज़ी भाषा का संमिश्रण किया। आज के भाषा के पंडित इस प्रकार से बड़े दिल से तथा कटुता रहित भाषा प्रचार का कार्य करते तो आज भाषा का इतिहास अलग होता। शिव बाबा तो परमपिता हैं इसलिये सब भाषाएँ और बच्चे उनकी रचना हैं। रचना का रचना के प्रति जो वात्सल्य भाव है वह जब सब में आयेगा तब ही अनेकता से एकता होगी। शिव बाबा का यह एकता का प्रयास समस्त विश्व पहचाने तो-तो सारे विश्व में जय-जयकार हो जाए। अब ऐसा जय-जयकार कराने वाला ईश्वरीय सेवा का पुरुषार्थ करना ज़रूरी है।

कौन जिम्मेवार ?

(ले० राजकुमारी, शालीमार बाग, देहली)

तेरी खुशी और ग़मी का,
तेरे रुदण और हँसी का,
पता है कौन जिम्मेवार ?
वो है तेरे ही संकल्पों का संसार।
जब तू अपने को तन माने,
व्यर्थ संकल्पों में खेल करे मनमाने,
ढोता रहेगा पाँच विकारों का भार
तब तेरी प्रभु से जुट न सकेगी तार
पता है इसका कौन जिम्मेवार ?
वो है तेरे ही संकल्पों का संसार।
हर्षाना है तो सोच स्वयं को आत्मा,
करदे हीन भावनाओं का तू खात्मा
तू शुद्ध, तू प्रबुद्ध,
फिर क्यों होवे तू क्षुब्ध,
तेरा जीवन प्रभु के गले का हार,
फिर भी न जुटे उससे गर तार;
तो इसका कौन जिम्मेवार ?
वो है तेरे ही संकल्पों का संसार।
पहले तो ऊपर उठ खुद की नज़रों में,
सदा झूम अरे तू रुहानी गज़लों में,
औरों की देहें भूल और अपनी को भी,
स्वचिन्तन से भगा माया सपनी को अभी,
तब भी अगर लगे यह जीवन बेकार,
तो फिर इसका कौन जिम्मेवार ?
वो है तेरे ही संकल्पों का संसार।
संकल्प उठा अरे ! तो स्वर्ग यहीं आएगा,
बीती याद करेगा तो नर्क भुगतेगा आह !
अनहोनी मायावी चाहत की तो,
विकर्म बनेगा, धर्मराज खड़ा वो,
फिर बिछे जो काँटों का जाल,
पता है कौन होगा इसका जिम्मेवार ?
वो है तेरे ही संकल्पों का संसार।
वक्त है समझ जा, खुद जागकर,
न फेंक रत्नों को पत्थर समझकर,
लूट आनन्द सागर और नदी मिलन का
न पड़ने दे आँख में माया का तिनका
फिर भी न कर पाया गर तूफाँ को पार,
तो पता है कौन इसका जिम्मेवार ?
अरे ! वो है तेरे ही संकल्पों का संसार।
संकल्प ही आत्मा का भोजन है,
यही संशय के झाड़ का बीजारोपण है,
न कोई दोस्त तेरा, न है कोई दुश्मन,
चैन न लेने दे जो, वो है तेरा अपना ही मन,
तेरी उन्नति व अवनति का—
पता है कौन जिम्मेवार ?
तेरे अपने संकल्पों का संसार।

शुद्ध आहार—गुरु ग्रन्थ साहिब के आधार पर

(ले० ब्र० कु० हरदीप सिंह, अम्बाला छावनी)

भोजन शरीर के निर्वाह के लिए बहुत आवश्यक है। खाद्यन्न के उपभोग के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। अतः महत्व जीवन को श्रेष्ठ आधार पर बनाए रखने का है। श्रेष्ठ जीवन का आधार नैतिक मूल्य व दिव्यगुण हैं, जैसे पवित्रता, सहनशीलता, धैर्यता, साहस, सच्चाई व ईमानदारी इत्यादि। इन गुणों के बिना जीवन नीरस है।

संसार के इस अविनाशी रंग-मंच पर दो चीजों द्वारा खेल होता है। पहली आत्मा है, दूसरी प्रकृति है। आत्मा रूपी एक्टर, प्रकृतिकृत शरीर रूपी वस्त्र धारण कर पार्ट बजाती है। भोजन की जहाँ शरीर के लिए अनिवार्यता है वहाँ सूक्ष्म रूप से इसका प्रभाव आत्मा पर भी पड़ता है। आत्मा पर प्रभाव पड़ने का अर्थ है संकल्प शक्ति, निर्णय शक्ति व संस्कारों पर प्रभाव पड़ना। शरीर को पुष्ट रखने के साथ-साथ आत्मा को भी सन्तुलित रखने के लिए किस प्रकार का अन्न खाना चाहिए, इसके बारे में 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' में गुरु नानक देव जी कहते हैं—

"बाबा होर खाना खुशी खुआर ॥
जितु खाधै तनु पीड़िऐ
मन महि चलहि विकार ॥"

जिन पदार्थों के खाने से मन में विकार पैदा होते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप शरीर को भी पीड़ा होती है, उनका उपभोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए। उदाहरण के तौर पर—शराब, सिग्रेट, मीट, मछली, अंडे, लहसुन व प्याज़।

शराब पीने वाले मनुष्य का स्वयं पर से नियंत्रण समाप्त हो जाता है। वह मुख से शब्दों के द्वारा गन्दी नाली के कीड़े की तरह गन्द उगलने लगता है। सिग्रेट पीने वाले स्वयं अपने रक्त को व पैसे को बल्कि स्वयं को सिग्रेट में जलाते-जलाते फुक जाते हैं। माँस, अंडा व मछली खाने वाले अपने शारीरिक बल को बढ़ाने के लिए अपना आत्म बल नष्ट कर देते हैं। उनमें सहनशीलता, प्रेम, सन्तुष्टता व मानवता नहीं होती बल्कि एक निर्दोष जानवर की गर्दन पर छुरी चलाने वाले अपने निर्दोष भाइयों की गर्दन पर भी छुरी चलाना सीख जाते हैं। इनके लिये 'गुरु ग्रन्थ साहिब' के पृष्ठ १३७५ में लिखा है,

"कबीर ज़ोर कीआ सो जुलमु है, लेई जबाबु खुदाइ ॥
दफ़्तर लेखा नीकसै, मार मुहै मुहि खाई ॥"

इसी प्रकार यह भी लिखा है—

"कबीर भाँग, माछुली सुरापान, जो प्रानि खाहीं ॥
तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातल जाँहि।"

लहसुन और प्याज़ भी तमोगुणी पदार्थ हैं। इनका प्रभाव सूक्ष्म रूप से मन में वासनात्मक विचार पैदा करता है। जब मन में पाँच चोर—काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार—अपना काम करेंगे तो आत्मा की शाँति व सुख का खज़ाना लुट जायेगा।

किसी जीव के खून द्वारा अपने जीव्हा को स्वाद दिलाना तो अपनी आत्मा की पवित्रता का खून करना है। अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ा मारना है। अपनी आत्मा के सुख व शाँति को अपने विनाशी शरीर की क्षुधापूर्ति में दफनाना है।

'गुरु ग्रन्थ साहिब' में एक अन्य स्थान पर गुरु नानक देव जी ने कहा है,

जे रतु लगै कपड़ै, जाया होए पलीत ॥
जो रतु पीवै माणसा, तिन किऊ निर्मल चीत ॥

अर्थात जिस रक्त की एक बूंद कपड़े पर लग जाने से वह अपवित्र माना जाता है। तो उस रक्त को पीने वालों का हृदय किस प्रकार पवित्र माना जा सकता है ?

'गुरु ग्रन्थ साहिब' का सार है कि मनुष्य इस

संसार में रहते हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार एवं अन्य विकारों को जीते, इसके लिए अपनी वृत्ति को सदा एक अकाल पुरख परमात्मा के साथ जोड़कर रखे।

हर कार्य को करने से पहले विचार मन में पैदा होता है। तो जैसा विचार होगा वैसा ही कार्य होगा। संकल्प है बीज और कार्य करने बाद इसका परिणाम है—संस्कार। सुखी जीवन श्रेष्ठ कार्यों के द्वारा बनता है। श्रेष्ठ कार्य तभी होंगे जब श्रेष्ठ संकल्प उत्पन्न होंगे श्रेष्ठ संकल्प उत्पन्न तब होंगे जब आत्मा अपने शारीरिक धर्म की संकीर्णता से हट कर, अपने अनादि शांत स्वरूप व पवित्र स्वरूप में स्थित होगी। अपने स्वधर्म में स्थित होने वाले कभी अशान्ति पैदा करने वाले तथा अपवित्रता बढ़ाने वाले कर्म नहीं करेंगे।

कहावत है—"जैसा अन्न, वैसा मन" अर्थात मन के संकल्प अन्न पर निर्भर करते हैं। यदि अन्न तमोगुणी है तो मन भी विकारी होगा और कर्म भी विकारी व निकृष्ट होंगे। तो जीवन भी शूद्रों वाला बन जायेगा।

अतः हमें शुद्ध अन्न लेना चाहिए। इसमें शाकाहारी भोजन, दूध, फल इत्यादि सब कुछ ले सकते हैं। साथ ही भोजन परमात्मा की स्मृति में पकाकर खाना चाहिये जिससे हमारा मन और परिणाम स्वरूप कर्म श्रेष्ठ बनें।

निराली पथिक

(ले० ब्र० कु० राजकुमारी, शालीमार बाग, देहली)

मैं पथिक रुहानी राहों की
फ़रिश्तेपन की मंज़िल मेरी।
चल पड़ी संकल्पों की पगडंडी पर
अटल विश्वास निज मन में धर
एक बल एक भरोसे याद तेरी।
फ़रिश्तेपन की मंज़िल मेरी॥
जीवन की सुबह औ शाम न देखी,
कोई भी लौकिक आस न रखी,
बस ली तो—
उसी के निश्चय की डोरी।
फ़रिश्तेपन की मंज़िल मेरी॥
आत्मस्थिति की ली है लाईट,
ईशस्मरण की पास मेरे माईट,
ज्ञान मंथन का मेरा सम्बल,
साथ में हर्ष औ योगबल,
इनसे मेरी चाल न थमे री।
फ़रिश्तेपन की मंज़िल मेरी॥
झाड़ियाँ आतीं कई कंटीली,
बिच्छू टिंडन औ झिंगुर भी,
पर—
श्रीमत की मेरी लाठी के आगे,
टिक न पाए, अरे सब भागे,
न मुझे रोक पाती कोई अंधेरी।
फ़रिश्तेपन की मंज़िल मेरी॥
कभी निकले प्राप्ति की सुहानी धूप भी
वो क्षण भंगुर, उसे न देती रुख कभी
टेढ़ी-मेढ़ी विधि जाए
तो भी मनवाँ न घबराए
न कभी खुशी लुटे री।
फ़रिश्तेपन की मंज़िल मेरी॥
समस्याओं के पत्थर न तोड़ती,
न इच्छाओं के नग से सर फोड़ती,
चलती जाती न रुकती—
चाहे बढ़े रात घनेरी।
फ़रिश्तेपन की मंज़िल मेरी॥
विजय मेरी तो निश्चित है,
सतयुगी सिंहासन मेरे प्रित है,
फिर क्यूँ कोई मुझे रोके री।
फ़रिश्तेपन की मंज़िल मेरी॥

राखी के पावन दिवस पर जालन्धर के जिलाधीश भ्राता जे० एस० केसर को ब्र० कु० राज राखी बांध रही हैं

फतेहपुर जिला अधिकारी भ्राता हरिश्चन्द्र जी ब्र. कु.सरिता द्वारा राखी बंधवाने के उपरान्त प्रसादी खा रहे हैं। पास में ब्र. कु. दुलारी तथा अन्य भाई खड़े हैं

अन्ना सेवा केन्द्र की ओर से ब्र. कु. गीता वहां के डिप्टी कमिश्नर भ्राता एस. आर. भारद्वाज जी को पवित्रता की सूचक राखी बांध रही हैं। साथ में ब्र. कु. भाई-बहन खड़े हैं

धर्मशाला (हिमाचलप्रदेश) केन्द्र की उमा बहन डिप्टी कमिश्नर को राखी बांध रही है। साथ में ब्र. कु. कमलेश तथा ब्र. कु. साहब सिंह हैं

कपूरथला के डिप्टी कमिश्नर भ्राता गुरुजीत सिंह चीमा को ब्र. कु. कृष्णा जी राखी बांधने के पश्चात् आत्मस्मृति का तिलक लगा रही है, साथ में अन्य भाई खड़े हैं

कटक में उड़ीसा राज्य के कमिश्नर (कार्मशियल टैक्सेस-फाईनेंस सर्विसस) को पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए ब्र०कु० मन्जु। साथ में ब्र० कु० कुलदीप आत्मस्मृति का टीका लगाने की प्रतीक्षा में, अन्य ब्र० कु० भाई तथा कमिश्नर जी का परिवार दिखाई दे रहा है।

जालन्धर के कमिश्नर भ्राता ऐ० एम० सैन जी को ब्रह्माकुमारी राज पवित्रता की सूचक राखी बांध रही हैं। निकट में ब्रह्माकुमारी राजकुमारी खड़ी हैं

ब्र० कु० ऊषा जी बेलगाम के कमिश्नर भ्राता सिसिल नरोना को पावन राखी बांधते हुए

रक्षा बन्धन के सुअवसर पर शोलापुर के कमिश्नर भ्राता वसंतराव कोल्हटकर जी को स्नेह तथा पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए दिखाई दे रही हैं ब्र० कु० सोमप्रभा

लखनऊ में ब्रह्माकुमारी सतो तथा शीला यू० पी० के नेरकोटिको कमिश्नर तथा उनकी धर्मपत्नि को राखी बांध रही हैं

कमिश्नर, डिप्टी कमिश्नर, जिलाधीश आदि को राखी का पवित्र सन्देश

चित्र में भ्राता ए० तिवाड़ी उड़ीसा राज्य के कमिश्नर तथा विशेष सचिव ब्र० कु० कमलेश जी से राखी बंधवा रहे हैं

ब्र० कु० सुकर्मा जी भ्राता रविप्रकाश नाग, डिप्टी कमिश्नर खाद्य, राजस्थान को आत्म-स्मृति का तिलक दे रही हैं

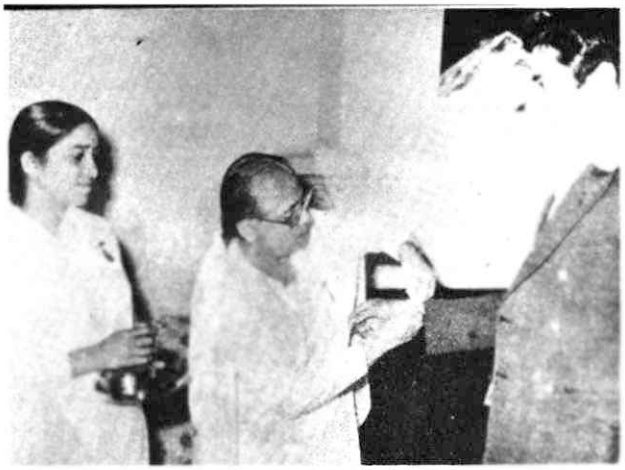

दार्जिलिंग में ब्र० कु० स्वदर्शन डिप्टी कमिश्नर भ्राता ए० के० देव को राखी बांधते हुए, साथ में ब्र० कु० केसर खड़ी है।

उदयपुर के जिलाधीश भ्राता जे० पी० सिंह जी को ब्र० कु० शील राखी बांधते हुए

रोहतक ज़िला के उपायुक्त भ्राता आर० डी० गर्ग को ब्र० कु० आभा राखी बांध रही है

ब्र० कु० सुदर्शन अतिरिक्त उपायुक्त भ्राता एस० मित्रा को "पवित्रता तथा स्नेह की सूचक" राखी बांधते हुए

इस चित्र में रायपुर के कलेक्टर भ्राता. नजीब जंग को ब्र० कु० विमला पवित्रता एवं स्नेह की सूचक राखी बांध रही है

इस चित्र में रायपुर के कमिश्नर भ्राता रघुनाथ प्रसाद जी को ब्र० कु० विमला पावन राखी बांध रही हैं, साथ में ब्र० कु० रेखा दिखाई दे रही हैं।

ब्र. कु. कल्पना कोयम्बतूर के जिला अधिकारी को 'पवित्र बनो, योगी बनो', का सन्देश देते हुए राखी बांध रही है, साथ में ब्र. कु. ऊमा, ब्र. कु. पलनिसामी, ब्र. कु. नटराजन तथा राजस्व अधिकारी भ्राता शनमुगम जी खड़े हैं

पुरी के जिलाधीश अशोक मिश्राजी को ब्र. कु. निरुपमा राखी बांधते हुए, साथ में उनका परिवार बैठा है

नेपाल में बागमती अंचलाधीश भ्राता सुन्दर प्रसाद शाह जी को राखी बांधने के पश्चात् उनकी पत्नी को राज बहन बहुत स्नेह से राखी बांध रही हैं

भिवानी जिला के उपायुक्त भ्राता चन्द्रसिंह जी को ब्र. कु. अनोखी जी राखी बांध रही है, साथ में ब्र .कु. नारायणी जी खड़ी हैं

रोपड़ में डिप्टी कमिश्नर ब्रजेन्द्र सिंह जी व उनकी पत्नी रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर ब्र. कुमारी राज से राखी बंधवा रहे हैं

नासिक के जिला अधिकारी भ्राता गोविंद स्वरूप जी रक्षा-बंधन के बाद अपना मत प्रकट कर रहे हैं। साथ में ब्र. कु. गीता जी बैठी हैं

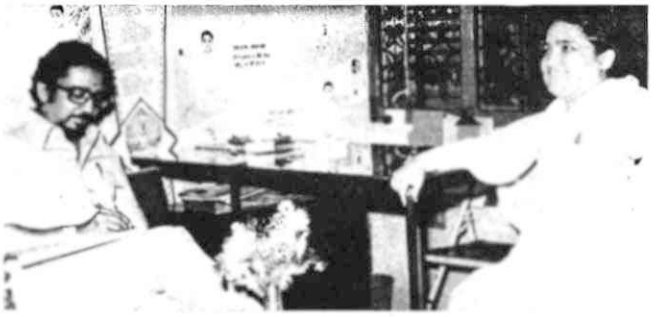

"एक भेंट"

लेखक—ब्रह्माकुमार गोलक, आबू पर्वत

(एक त्रैतवादी शास्त्र अनुगामी और ब्रह्मा वत्स का संवाद)

शास्त्रवादी—आप भगवान को निराकार मानते हैं या साकार ?

ब्रह्मा वत्स—किसी भी देह-धारी को 'भगवान' नहीं कहा जा सकता क्योंकि परमात्मा अजन्मा है। अतः परमात्मा निराकार ही है।

शास्त्रवादी—परन्तु आपने निराकार परमात्मा को एक-देशी कैसे मान लिया ? वह तो सर्वत्र हैं। आपने तो उसे एक देश में बैठा दिया है।

ब्रह्मा वत्स—आप परमात्मा को चेतन तो मानते ही हैं।

शास्त्रवादी—हाँ, प्रकृति जड़ है और आत्मा तथा परमात्मा चेतन हैं।

ब्रह्मा वत्स—तब भला परमात्मा सर्वत्र कैसे है, क्या आप बतायेंगे ?

शास्त्रवादी—सोचते हुए—कैसे है ?

जैसे अग्नि, आकाश आदि सर्वत्र हैं, वैसे···

ब्रह्मा वत्स—बन्धु, अग्नि आदि तो प्रकृति के जड़ तत्त्व हैं, जड़ से चेतन की तुलना कैसे कर दी आपने ?

जड़ और चेतन में यही अन्तर है कि जड़ वस्तुएँ सर्वत्र हैं, चेतन सर्वत्र नहीं हो सकता। नहीं तो चेतनता भी सर्वत्र व्याप्त हो।

शास्त्रवादी—बन्धु, व्याप्य और व्यापक एक नहीं होते। व्याप्य एक-देशी और व्यापक सर्व-देशी होता है। जैसे आकाश सब में व्यापक है परन्तु पृथ्वी व आकाश एक नहीं, वैसे ही ईश्वर व जगत एक नहीं।

ब्रह्मा वत्स—यह आपका तर्क गलत है। पहले हमारे प्रश्न को समझिए, जैसे चेतन आत्मा शरीर में विराजमान होने से जड़ शरीर द्वारा भी उसकी चेतनता प्रत्यक्ष होती है, मनुष्य भी चेतन रहता है यद्यपि शरीर व आत्मा एक नहीं है। अर्थात, जहाँ जो है, वहीं उसके गुण भी होते हैं। आकाश सर्वत्र है तो आकाश के गुण भी तो सर्वत्र हैं ना। तो परमात्मा का गुण 'चेतनता' सर्वत्र दर्शित क्यों नहीं ? हम ये नहीं कह रहे हैं कि ईश्वर व प्रकृति एक हैं; हम यह कह रहे हैं कि चेतनता सर्वत्र क्यों नहीं ?

शास्त्रवादी—यह हम नहीं मान सकते।

ब्रह्मा वत्स—अच्छा भला आप यह तो मानते ही हैं कि परमात्मा भी एक आत्मा है।

शास्त्रवादी—हाँ, परन्तु वह सर्व आत्माओं में परम, व्यापक सत्ता है।

ब्रह्मा वत्स—अच्छा, यह तो बताइये कि आत्मा का रूप क्या है ?

शास्त्रवादी—आत्मा अरूप है, निराकार है। चेतन सत्ता निराकार ही होती है।

ब्रह्मा वत्स—परन्तु आत्मा एक-देशी है, या सर्वव्यापक ?

शास्त्रवादी—एक देशी।

ब्रह्मावत्स—वाह जी, आपके सिद्धान्त भी खूब हैं। आप परमात्मा को परम आत्मा भी मानते हैं और फिर आत्मा को एक-देशी व परमआत्मा को सर्व देशी मानते हैं। यह कैसा तर्क ?

शास्त्रवादी—परमात्मा की सर्वव्यापकता परम सत्य है।

ब्रह्मा वत्स—अच्छा भला यह तो बताओ कि जब आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा लेती है तो उसका कुछ रूप तो होगा ही, वरना शरीर से क्या

निकलता है ?

शास्त्रवादी—हाँ, ऐसे तो आत्मा अति सूक्ष्म रूप वाली है भी।

ब्रह्मा वत्स—तो बन्धु वही अति सूक्ष्म रूप परमात्मा का भी तो होना चाहिए।

शास्त्रवादी—नहीं, नहीं। ऐसा नहीं।

ब्रह्मा वत्स—भाई जी जरा शान्त चित्त होकर सोचिये तो सही। वेदों में भी तो परमात्मा को अति सूक्ष्म, परमाणु से भी सूक्ष्म कहा है, फिर उसका भी तो सूक्ष्म रूप होगा ना ?

शास्त्रवादी—(विचार मुद्रा में)

ब्रह्मा वत्स—और परमात्मा का साक्षात्कार भी तो होता है, इससे भी तो उसका रूप होना सिद्ध होता है ?

फिर जिसका रूप है, उसका स्थान भी अवश्य ही होगा। परन्तु वेदों में इसका स्पष्टीकरण नहीं है। तो भगवान के धाम का ज्ञान न होने के कारण उसे सर्वत्र ही मानना पड़ा। परन्तु यह भूल है बन्धु···

शास्त्रवादी—वेदों में तो सब-कुछ स्पष्ट है।

ब्रह्मा वत्स—परन्तु यह तो बताओ कि आत्माएँ इस सृष्टि पर कहाँ से आईं व मुक्त होकर कहाँ जाती हैं ?

शास्त्रवादी—अन्तरिक्ष में।

ब्रह्मा वत्स—परन्तु बन्धु अन्तरिक्ष तक तो प्रकृति ही है। परन्तु आत्मा देह-रहित स्थिति में अर्थात मुक्त अवस्था में ५ तत्त्वों के वायुमण्डल में नहीं रह सकती। ५ तत्वों के वायुमण्डल में या तो उसे देह सहित रहना होगा या सूक्ष्म शरीर सहित।

परन्तु जब आत्मा पूर्णतया देह-मुक्त है, तब वह कहाँ है ?

शास्त्रवादी—(विचार मग्न)···

ब्रह्मा वत्स—ढूँढ़िये कोई मन्त्र अपने शास्त्रों में।

बन्धु···मुक्त अवस्था में अवश्य ही वह अन्तरिक्ष के भी पार होनी चाहिए। परन्तु आपके विचार वहाँ तक नहीं जा सकते क्योंकि आप केवल वहीं तक सोच सकते हैं, जहाँ तक पुस्तकों में लिखा है। परन्तु जो बात नहीं लिखी—वह सोचना, यह भला आप कर भी कैसे सकते हैं। यदि कहीं लिखा भी है कि आत्मा ब्रह्मलोक में जाती हो तो ब्रह्मलोक का पता नहीं कि कहाँ है।

शास्त्रवादी—परन्तु शास्त्र तो सम्पूर्ण ज्ञान की सत्य पुस्तकें हैं।

ब्रह्मा वत्स—यह मानना भोलापन ही है। किसी समय होगे, परन्तु अब नहीं हैं। अच्छा बताइये—"आत्माओं के लोक का वर्णन स्पष्ट रूप से कहाँ है," मुक्ति के अनेक रहस्य भी कहीं नहीं हैं। यहाँ तक कि आत्मा का सम्पूर्ण ज्ञान भी कहीं नहीं है। और परमात्मा व सृष्टि-रचना के बारे में तो विभिन्न वाद हैं ही आत्मा के उत्थान व पतन के कारण व समय का ज्ञान भी कहीं नहीं है और सहज योग का स्पष्टीकरण भी कहीं नहीं है।

शास्त्रवादी—तो सम्पूर्ण ज्ञान शास्त्रों में नहीं तो कहाँ है ?

ब्रह्मा वत्स—वह है ज्ञान के सागर प्रकाश-स्वरूप परमात्मा के पास। वे स्वयं ही प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ज्ञान देते हैं। खैर यह चर्चा तो हम पीछे करेंगे।

तो आत्माओं का धाम अन्तरिक्ष के पार, परमधाम है और वह ही परमात्मा का भी धाम है।

शास्त्रवादी—फिर तो अनेक दोष आ जाते हैं।

ब्रह्मा वत्स—दोष कोई नहीं आयेगा, अच्छा दोषों की चर्चा करने से पहले आप यह बताओ कि आप स्वयं को परमात्मा से दूर महसूस करते हैं या समीप ?

शास्त्रवादी—दूर भी हैं और समीप भी।

ब्रह्मा वत्स—यह कैसे ?

शास्त्रवादी—दूर इसलिए कि हम उसकी खोज में है और समीप इसलिए क्योंकि वह सर्वत्र है।

ब्रह्मा वत्स—अच्छा भला उसकी समीपता का क्या अनुभव है आपको ?

शास्त्रवादी—जब कोई बुरा कर्म करने का ख्याल आता है तो अन्दर से यह प्रेरणा आती है कि यह न करो। वह परमात्मा की ही प्रेरणा है।

ब्रह्मा वत्स—सभी यही एक अनुभव सुनाते हैं। इसके अतिरिक्त भी कोई अनुभव होता है या नहीं ? भगवान आपके साथ है तो उसकी समीपता के कितने आश्चर्यजनक अनुभव होने चाहिएँ।

दूसरी बात यह है कि जब आपको अन्दर से प्रेरणा आती है तो क्या आपको यह महसूस होता है कि यह प्रेरणा किसी दूसरे की है ?

शास्त्रवादी—यह बताना तो अति गुह्य है।

ब्रह्मा वत्स—वह श्रेष्ठ प्रेरणा वास्तव में तो आत्मा की ही है क्योंकि वास्तविक स्वरूप में आत्मा भी तो शुद्ध ही है।

शास्त्रवादी—चलो होगी—ऐसा मान लेते हैं।

ब्रह्मा वत्स—अच्छा, परमात्मा की समीपता का कोई अन्य अनुभव सुनाओ।

शास्त्रवादी—और क्या अनुभव ?

ब्रह्मा वत्स—परमात्मा परम पवित्र, सर्वशक्तिमान हैं। उनके समीप रहते आप भी पवित्र (ब्रह्मचर्य में) रहते होंगे ?

शास्त्रवादी—नहीं भाई मैं झूठ क्यों बोलूं, मैं तो गृहस्थी हूँ। इतना बल मुझ में कहाँ है ?

ब्रह्मा वत्स—फिर तो परमात्मा की व्यापकता का कोई लाभ नहीं हुआ, सर्वशक्तिमान स्वयं आपके साथ और आप में पवित्र रहने का भी बल नहीं। तब भला आप किस बल पर परमात्मा की सर्वव्यापकता का ढिंढोरा पीटते हो।

शास्त्रवादी—भाई, ये तो युग-युग की मान्यता है।

ब्रह्मा वत्स—देखो, ब्रह्मा कुमार व ब्रह्मा कुमारियाँ परमात्मा के स्वरूप व धाम को जानते हुए उससे योग-युक्त होते हैं तो हमें परमात्मा के सर्व गुण अनुभव में आते हैं। उससे सर्व शक्तियाँ प्राप्त होती हैं और पवित्र जीवन व्यतीत करने का बल प्राप्त होता है।

शास्त्रवादी—सर्व गुण कैसे ?

ब्रह्मा वत्स—आप सर्व व्यापी मानने वाले क्या जानें प्यार के सागर परमात्मा का असीम प्यार और ज्ञान के सागर परमात्मा का गुह्य ज्ञान। ब्रह्मा-वत्सों ने उनसे योग-युक्त होकर और प्यार और आनन्द का जीवन में अनुभव किया है। बोलो क्या आपको परमात्मा के प्यार का क्षण-भर का भी अनुभव है ?

शास्त्रवादी—परमात्मा सर्वव्यापी न मानने से कई दोष आ जाते हैं।

ब्रह्मा वत्स—बोलिये क्या-क्या दोष आते हैं हम उनका निवारण करें।

शास्त्रवादी—वह सर्वत्र नहीं है तो सबके कर्मों को देखता कैसे है, जो सभी को दण्ड देता है। बिना सर्वत्र हुए वह सर्वज्ञ भी नहीं हो सकता। बिना सर्वत्र हुए वह सृष्टि की स्थापना व संहार भी नहीं करा सकता।

ब्रह्मा वत्स—जबकि आज विज्ञान के यन्त्रों द्वारा एक स्थान पर बैठकर सब-कुछ देखा जा सकता है तो परमात्मा को सब कुछ देखने के लिए सर्वत्र होने की क्या आवश्यकता है ?

जबकि एक योगी भी एक स्थान पर बैठकर दूर के दृश्य देख सकता है तो योगेश्वर को सर्वत्र होने की क्या आवश्यकता।

क्या आज मनुष्य एक देशी होकर बहुत काल का, दूर देश का अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता। फिर भला सर्वज्ञता के लिए सर्वव्यापकता की क्या आवश्यकता ?

क्या विज्ञान के द्वारा एक स्थान पर बैठकर ही विनाश नहीं किया जा सकता, इसमें परमात्मा को सर्वत्र होने की क्या आवश्यकता ?

क्या किसी को कोई वस्तु बनाने के लिए वस्तु में सर्वत्र होने की आवश्यकता होती है। कुम्हार घड़ा बनाता है, क्या वह घड़े में व्यापक होता है ?

ये आपके तर्क बहुत पुराने हैं। अब विज्ञान के युग में ये तर्क स्वतः ही खण्डित हो गये हैं।

शास्त्रवादी—आश्चर्य से देखता हुआ···

ब्रह्मा वत्स—बन्धु, भगवान को केवल पुस्तकों से ही नहीं जाना जा सकता। भगवान स्वयं ही स्वयं को जानते हैं व ज्ञान देते हैं। उसके द्वारा ही हम उसे

जान सकते हैं।

शास्त्रवादी—आप तो संस्कृत भी नहीं जानते। बिना संस्कृत के आप कुछ भी नहीं जान सकते।

ब्रह्मा वत्स—(हँसते हुए) परन्तु भारत की प्राचीन संस्कृति तो जानते हैं और अपनाते हैं।

शास्त्रवादी—(उत्तेजित होकर) यह कैसे कहा आपने ?

ब्रह्मा वत्स—बन्धु, शीतल हो जाओ···

क्या शंकराचार्य आदि संस्कृत के महापण्डित नहीं थे, जिनके अद्वैत वाद को आप भ्रम कहते हो। क्या पुराणों के कर्त्ता, उपनिषद, वेदान्त, भागवत व दर्शनों के रचने वाले संस्कृत के धुरन्धर विद्वान नहीं थे। जिनका आप खण्डन करते हो। क्या सनातनी, शैव, वैष्णव सभी वेदों के ही मानने वाले नहीं हैं, जिन्हें आप मन्द मति मानते हैं।

क्या संस्कृत के एक मन्त्र के अनेक अर्थ करने के कारण 'हिन्दू-धर्म' के अनेक खण्ड नहीं हुए···क्या संस्कृत के शास्त्रार्थ के कारण ही आपस में मन-मुटाव और आपस में वैर भाव का वातावरण नहीं बना ? भारत की प्राचीन संस्कृति तो प्रेम और शान्ति थी। उसी को हम मानते हैं।

शास्त्रवादी—निरुत्तर सा।

ब्रह्मा वत्स—महाशय···भगवान को जानने के लिए संस्कृत की विद्वता की बात नहीं, पवित्र व निश्छल दिव्य बुद्धि की आवश्यकता है, प्रभु-प्रेम और सत्य ज्ञान की आवश्यकता है।

शास्त्रवादी—परन्तु भगवान ने तो ज्ञान संस्कृत में ही दिया।

ब्रह्मा वत्स—क्या परमात्मा केवल संस्कृत ही जानता है ?

तब तो दूसरी भाषाओं में जो भक्त उसे पुकारते हैं, वह उनकी पुकार भी नहीं सुनता होगा।

शास्त्रवादी—इसलिए ही तो याद करने के मन्त्र संस्कृत में हैं।

ब्रह्मा वत्स—परन्तु भगवान के बच्चे तो मुसलमान, बौद्धी व इसाई सभी भाषा-भाषी हैं तो क्या वह अंग्रेज़ी ही भाषा जानने वालों की अंग्रेज़ी में प्रार्थना नहीं सुनता।

शास्त्रवादी—यह प्रश्न नहीं है।

ब्रह्मा वत्स—आप यह तो मानते हैं कि परमात्मा सम्पूर्ण हैं और सत्य स्वरूप हैं ?

शास्त्रवादी—जी हाँ !

ब्रह्मा वत्स—तो आपको यह मालूम होना चाहिए कि वह सत्य स्वरूप परमात्मा स्वयं ही एक मानवी तन में आकर उसके मुख द्वारा सत्य ईश्वरीय ज्ञान देता है ताकि भ्रान्ति की बात ही न रहे।

शास्त्रवादी—परन्तु एक ओर आप परमात्मा को निराकार तथा अजन्मा मान रहे हैं, दूसरी ओर अवतार···यह कैसी कल्पना।

ब्रह्मा वत्स—जन्म व अवतार के भेद को जानो। यह महान् भूल इस सर्वव्यापकता के कारण ही हुई।

शास्त्रवादी—तो आप क्या कहना चाहते हैं ?

ब्रह्मा वत्स—यही कि वह सर्वत्र नहीं, ब्रह्म लोक के वासी हैं। अजन्मा हैं यानि माँ के गर्भ में नहीं आते। परन्तु कलियुग के अन्त में पुनः सत्य ज्ञान देने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के मानवी तन में प्रवेश करते हैं जिसे दिव्य अवतार कहा जाता है।

शास्त्रवादी—परन्तु तब तो सदा-मुक्त परमात्मा देह के बन्धन में आ जायेंगे।

ब्रह्मा वत्स—नहीं, वह केवल उनके मुख से ज्ञान देते हैं। वे अपना सम्बन्ध इस शरीर के मस्तिष्क, मुख, आँख व कानों से ही करते हैं। इससे उनको जन्म-मरण के दोष नहीं लगते। वो मुक्त ही रहते हैं। स्वइच्छा से आ जा सकते हैं। जन्म व अवतार में यही महान अन्तर है।

शास्त्रवादी—तो आपका मतलब यह है कि सर्वव्यापकता भ्रान्ति है ?

ब्रह्मा वत्स—भ्रान्ति नहीं, भावना है ?

देखो, अगर वह कर्त्तव्य ही न करे तो उसकी महिमा ही कैसे हो ? सर्वव्यापी तो निष्क्रिय ही होगा !

अगर वह न मिले तो उससे मिलने की आकांक्षा

क्यों ? उसे 'पतित-पावन' और दुःख-हर्त्ता' कहते हैं। अवश्य ही कभी उसने सबके दुःख हरे हैं। इसके लिए उसे शरीर का आधार लेना आवश्यक है।

शास्त्रवादी—नहीं, कर्त्तव्य तो वह ऐसे ही करता है—देखो उपनिषद के ये वचन हैं कि उसके कान नहीं, परन्तु वह सुनता है, आँख नहीं, देखता है, पग नहीं, परन्तु वायु से भी तीव्र-वेगी है।

ब्रह्मा वत्स—बन्धु, यह तो बताओ जबकि उससे कोई रिक्त स्थान ही नहीं फिर वह दौड़ता कहाँ है ? वह तो निष्क्रिय हो गया।

शास्त्रवादी—ऐं ?···यह तो कभी विचारा ही नहीं।

ब्रह्मा वत्स—बन्धु, यह तो भगवान का महत्व बढ़ाने के लिए उसे सर्वत्र कह दिया गया होगा। अब सत्यता को जानो और उससे मिलन का आनन्द लो।

शास्त्रवादी—मैं अवश्य ही आपकी बातों पर विचार करूँगा और आपके आश्रम पर भी आऊँगा। अच्छा अब विदाई लेता हूँ—नमस्ते।

ब्रह्मा वत्स—नमस्ते। ओम शान्ति···

—□—

(रक्षा बन्धन तथा जन्माष्टमी पर की गई ईश्वरीय सेवाएं पृष्ठ ३६ का शेष)

बहुत ही उत्साह वर्धक सेवा समाचार प्राप्त हुए हैं।

देहली तथा आस पास के सेवा केन्द्रों ने इन त्योहारों पर शिव बाबा का सन्देश बड़े ज़ोर शोर से दिया। जिसमें मालवीय नगर सेवा केन्द्र की ओर से भारत के राष्ट्रपति तथा भारत के मंत्रियों व न्यायाधीशों को राखी बाँधी गई, पहाड़ गंज सेवा केन्द्र के बहन भाइयों ने प्रमुख धार्मिक नेताओं को राखी का पवित्र सन्देश दिया। पालम सेवा केन्द्र की ओर से सेना अधिकारीगण को पवित्रता और स्नेह सूचक राखी बाँधी। पाण्डव भवन करोल बाग के बहन भाइयों ने उपराष्ट्रपति व अन्य मन्त्रियों को रक्षा बंधन का सन्देश दिया। शक्ति नगर सेवा केन्द्र की ओर से देहली के उपराज्यपाल, केन्द्रीय मन्त्रियों, न्यायाधीशों आदि-आदि को राखी का सन्देश दिया। चाँदनी चौक के भाई बहनों ने अपंगों को राखी का संदेश दिया। ग्रीन पार्क सेवा-केन्द्र के भाई बहनों ने डाक्टरों, केन्द्रीय मन्त्रियों, उद्योगपतियों आदि-आदि को राखी बाँधकर 'पवित्र बनो योगी बनो' का संदेश दिया। इस प्रकार देहली तथा देहली के आस पास जैसे कि मेरठ, बुलन्दशहर, सिकन्द्राबाद, ककोड़, फरीदाबाद, बल्लबगढ़, गाजियाबाद आदि-आदि से बहुत ही सुन्दर समाचार प्राप्त हुए हैं इसी प्रकार महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, आसाम, नेपाल, आन्ध्र प्रदेश कर्नाटक, तमिलनाडु से ईश्वरीय सेवा के समाचार प्राप्त हुए हैं।

—:o:—

रक्षा बन्धन तथा जन्माष्टमी पर की गई ईश्वरीय सेवाएं

गुजरात क्षेत्र के भिन्न-भिन्न सेवा केन्द्रों द्वारा राखी, जन्माष्टमी के अवसर पर विविध रीतियों से शिवबाबा का सन्देश दिया गया, कुछ सेवाकेन्द्रों के समाचार इस प्रकार हैं :—

बड़ौदा—सेवा केन्द्र पर रक्षा बंधन के दिन शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को पावन राखी बाँधी गई, जिसमें राज्य के वित्त मंत्री, ज़िला कलेक्टर, ज़िला न्यायाधीश आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त शहर के चार मुख्य डिपो के मैनेजर, ड्राइवर, कडंक्टर आदि करीब २५० भाइयों को राखी बाँधी गई। सायं को पवित्रता शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें आने वाले भाई-बहिनों को टोली तथा ज्ञान-पुस्तक 'विकारों पर विजय' सौगात में दी गई।

मणिनगर—(अहमदाबाद)सेवा केन्द्र पर राखी का पर्व बड़ी सुन्दर रीति से मनाया गया तथा ए० एम० टी० एस० के कर्मचारियों, रेलवे अधिकारियों, पुलिस स्टाफ तथा जेलर्स आदि को पवित्र राखी बाँधी गई। इसके अतिरिक्त शहर के प्रमुख व्यक्तियों को भी 'पवित्रता और स्नेह' की सूचक राखी बाँधी गई तथा साहित्य भेंट किया गया, जिनमें गवर्नर, वाईस चाँसलर, पुलिस अधिकारी, डिप्टी कमिश्नर तथा संत आदि सम्मिलित हैं। जन्माष्टमी के अवसर पर भी झाँकी, प्रदर्शनी, योग शिविर तथा शोभा यात्रा के कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनसे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

नडियाड—सेवा केन्द्र की ओर से रक्षा बंधन के पर्व पर नडियाड, खेड़ा, कपड़भंज की जेलों में कैदियों को राखी बाँधी गई तथा सेंटर पर भी स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त छात्रालयों तथा एस० टी० डिपो के कर्मचारियों को भी राखी बाँधी गई। सेंटर से संबंधित गीता-पाठशालओं पर रक्षा बंधन तथा स्नेह मिलन का आयोजन किया गया।

भरूच—सेवाकेन्द्र की ओर से स्थानीय कारागार में कैदियों को राखी बांधी गई तथा जिला डिपो व अंकलेश्वर डिपो के कर्मचारियों को भी शुभ संदेश देते हुए राखी बाँधी गई। इसके अतिरिक्त सायं को सेवा केन्द्र पर शहर के प्रमुख व्यक्तियों का स्नेह मिलन रखा गया, जिसमें सभी ने कुछ न कुछ बुराई व व्यसन छोड़ने का प्रण किया।

सूरत—सेवा केन्द्र की ओर से शिक्षकों तथा शिक्षा निरीक्षकों के लिए दस शिविरों का आयोजन किया गया जिनसे १२००-१३००शिक्षक लाभान्वित हुए।

पाटन—सेवा केन्द्र द्वारा रक्षा बंधन के अवसर पर एस० टी० बस डिपो, सरकारी हस्पताल तथा जेल में विविध कार्यक्रम रखकर लगभग ६०० आत्माओं को राखी बाँध कर अवगुणों का त्याग करने की प्रतिज्ञा कराई गई। इसके अतिरिक्त सवेरे तथा सायं को सेवा केन्द्र पर शहर के प्रमुख व्यक्तियों का स्नेह मिलन रखा गया, जिनमें नगर पालिका के प्रेज़ीडेंट, व्यापारी एसोसिएशन के प्रमुख, प्रोफेसर्स, डाक्टर, प्रिंसिपल आदि शामिल हुए।

मेहसाना—सेवा केन्द्र की ओर से आसपास के गाँवों खेराल, रिद्रोल, लाखवड़ में प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविरों का आयोजन किया गया जिनसे हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया। रक्षाबंधन का पर्व भी बड़ी धूमधाम से मनाया गया तथा प्रमुख व्यक्तियों का स्नेह मिलन भी रखा गया। इसके अतिरिक्त जेल के कर्मचारियों, एस० टी० बस डिपो के कर्मचारियों तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों, जिनमें कलैक्टर, ज़िला न्यायाधीश, उद्योगपति, महिला कार्यकर्त्ता आदि शामिल हैं, को भी पवित्र राखी बाँधी गई।

भावनगर—सेवा केन्द्र की ओर से सुभाष नगर के भगवानेश्वर मंदिर में प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिनसे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। रक्षा बंधन के पर्व पर

शहर के प्रमुख व्यक्तियों का स्नेह मिलन आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त सामाजिक संस्थाओं में भी रक्षा बंधन के विविध कार्यक्रम हुए, जिनमें बाल संरक्षण गृह, वृद्धाश्रम, बहिरे-गूंगों की शाला, अन्धशाला,बालाश्रम,सेंट्रल जेल, विकलांग सोसायटी, एस० टी० डिपो आदि उल्लेखनीय हैं। इसके साथ-साथ महुवा उपसेवा केन्द्र पर भी रक्षा बंधन के अवसर पर लकड़ी तथा चाय के व्यापारियों के अलग-अलग स्नेह मिलन रखे गए तथा आसपास के गाँवों में भी प्रवचन आदि के कार्यक्रम रखे गए जिनसे अनेक आत्माएं लाभान्वित हुईं।

राजकोट—सेवा केन्द्र की ओर से उद्योग में योग प्रदर्शनी तथा उद्योगिक शान्ति शिविरों का आयोजन किया गया। शहर के मुख्य उद्योगपतियों ने तथा हज़ारों कारीगरों ने इस प्रदर्शनी को देखा और योग सीखा जिससे उद्योगिक शान्ति बनाए रखने में सहायता मिलेगी। इसके अतिरिक्त एल० आई० सी० क्वार्ट्ज़ में त्रिदिवसीय चरित्र उत्थान प्रवचनों का प्रोग्राम रखा गया तथा जयनाथ हाल में एक सप्ताह के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिससे हज़ारों आत्माओं ने आध्यात्मिक लाभ उठाया।

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी रक्षा बन्धन एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर भारत के उत्तरीय क्षेत्र के विभिन्न सेवा केन्द्रों द्वारा आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के सेवा केन्द्रों द्वारा अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों को रक्षा-बन्धन का वास्तविक रहस्य बतलाते हुए राखियाँ बाँधी गई, और सायं काल के समय आध्यात्मिक प्रवचनों आदि का आयोजन भी किया गया। इस प्रकार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर भी विभिन्न प्रकार की सजीव झाँकियों को सजाने के समाचार मिले हैं। यथा शक्ति के अनुसार भिन्न भिन्न सेवा केन्द्रों द्वारा इन दोनों महोत्सवों पर विभिन्न प्रकार की आध्यात्मिक सेवायें की गईं। जिसमें करनाल, अम्बाला कैन्ट, अमृतसर, गुरदासपुर, फिरोजपुर शहर, पटियाला, फिरोजपुर कैन्ट, पालमपुर, जगाधरी, रोपड़, पठानकोट, धर्मशाला, शिमला जालन्धर, मोगा, सोनीपत, होशियारपुर, हांसी, रोहतक, भिवानी, पानीपत, बरनाला आदि-आदि सेवा केन्द्रों के नाम उल्लेखनीय हैं।

चन्डीगढ़ में १६ सूत्री कार्यक्रम के सम्बन्ध में प्रैस कन्फ्रेंस का आयोजन किया गया जिसमें आठ समाचार पत्रों के संवाददाताओं ने भाग लिया। उनको १६ सूत्री कार्यक्रम के फोल्डर दिये गए तथा उन्हें राजयोग शिविर में राजयोग का अभ्यास करने के लिए निमन्त्रण दिया गया। रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर पंजाब के राज्यपाल, कमिश्नर, न्यायाधीशों, डिप्टी कमिश्नर आदि-आदि को राखी का पावन सन्देश दिया गया। स्थानीय केन्द्रीय जेल में कैदियों को राखी बाँधी गईं, उन्होंने कोई न कोई बुराई छोड़ने का संकल्प लिया। जन्माष्टमी के अवसर पर सेवा केन्द्र पर सात देवियों की झाँकी तथा स्वर्ग की झाँकी सजाई गई जिससे हज़ारों लोगों ने इसे देख लाभ उठाया। इसी प्रकार चन्डीगढ़ के आस-पास सेवा केन्द्रों ने भी रक्षा बंधन, जन्माष्टमी पर शिवबाबा का सन्देश बड़ी तत्परता से दिया।

अमृतसर में राखी के पावनपर्व पर बहनों के निमन्त्रण पर शहर के भिन्न-भिन्न वर्ग के व्यक्ति सेवा केन्द्र पर राखी बंधवाने आए जैसे कि क्षेत्रीय टाऊन प्लैनर, धर्मशालाओं के मालिक, बैंके के मैनेजर, प्रिंसीपल आदि-आदि ने पवित्र राखी बंधवा कर पवित्र बनने की प्रेरणा ली। जन्माष्टमी का त्योहार भी "ब्रह्मा सो श्रीकृष्ण" की झांकी बनाकर बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

होशियारपुर के भाई बहनों ने डाक्टर, इन्जीनियर, प्रिन्सीपल व्यापारी और टेलीफोन के अधिकारियों को 'पवित्र बनो योगी बनो' की राखी बांधी। वहाँ की जिला जेल में कैदियों को और अधिकारियो को राखी बोधने के पश्चात् सात दिन का कोर्स भी कराया जिससे जेल का वातावरण बहुत ही दिव्य और अलौकिक रहा।

जालन्धर में जन्माष्टमी के अवसर पर सैनिकों

की दो रैजिमेंटों के मन्दिरों में प्रवचन के कार्यक्रम रखे गए तथा सेवा केन्द्र पर स्वर्ग की झाँकी सजाई गई जो कि दर्शकों के लिए आकर्षण का केन्द्र थी। स्थानीय सुधार घर (जेल) में साप्ताहिक कोर्स आरम्भ होने से जेल के प्रबन्धक तथा कैदी बहुत लाभ उठा रहे हैं। इसके अतिरिक्त विशाल प्रांतीय सनातन धर्म सम्मेलनों में बहनों के प्रवचनों तथा बच्चों द्वारा भावभीने प्रोग्रामों से जनसमूह गद-२ हो उठा।

राजस्थान क्षेत्र के भिन्न-भिन्न सेवा केन्द्रों पर रक्षा बंधन जन्माष्टमी को बड़ धूमधाम से मनाया। कुछ समाचार इस प्रकार हैं :—

जयपुर—रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर संग्रहालय की ओर से राजस्थान के मुख्य मंत्री शिवचरण जो माथुर तथा अन्य मंत्रीगण तथा विधायकों को पावन राखी बाँधकर ईश्वरीय सन्देश दिया गया। सायंकाल संग्रहालय में सार्वजनिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें रक्षा बन्धन का आध्यात्मिक रहस्य समझाया गया।

जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर संग्रहालय में आकर्षक, शिक्षाप्रद, भव्य चैतन्य झाँकियों का आयोजन किया गया जिसको सैकड़ों आत्माओं ने देखा और लाभ उठाया।

जयपुर—राजा पार्क की ओर से माननीय गवर्नर महोदय के० डी० शर्मा जी को राखी बाँधी गई तथा मुख्यालय पधारने के लिए ईश्वरीय निमन्त्रण दिया गया। इनके अलावा शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों, मुख्य न्यायाधीशों तथा पुलिस अधिकारियों को भी पावन राखी बाँधी गई।

जोधपुर—आल इण्डिया मेडिकल ऐसोसिएशन जोधपुर के तत्वाधान में महात्मा गाँधी चिकित्सालय के लेक्चर हॉल में डॉ० गिरीस पटेल का भाषण का आयोजन किया गया। सभी मुख्य-मुख्य डाक्टरों ने भाग लिया तथा बड़ी रुचिपूर्वक प्रवचन सुने। इस प्रकार डाक्टरों की अच्छी सेवा की गई। इसके अलावा यूनिवर्सिटी के जसवन्त हॉल में बैंक अधिकारियों द्वारा आयोजित एक आध्यात्मिक प्रोग्राम में रक्षा बन्धन का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट किया गया। इस प्रकार बैंक अधिकारियों की सेवा की गई।

अजमेर—रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर बाहर के विशिष्ट व्यक्तियों को राखी बाँधी गयी। शाम को मुख्य व्यक्तियों का प्रोग्राम आश्रम पर भी रखा गया। स्थानीय अखबार के सम्पादकगण भी पधारे थे। राखी बाँध कर सभी की अच्छी सेवा की गई। इसके अलावा अन्ध विद्यालय में राखी बाँध कर ईश्वरीय सेवा की गई।

उदयपुर—उदयपुर में रक्षा बन्धन का पावन पर्व बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया। जिलाधीश भ्राता जे० पी० सिंह को राखी बाँधकर साहित्य भेंट किया गया। इसके अलावा पुलिस के उच्च अधिकारियों तथा मुख्य व्यक्तियों को राखी बाँधकर ईश्वरीय सेवा की गयी।

सिरोही—राखी के पावन पर्व पर सिरोही में कलेक्टर, एस० पी०, डिप्टी एस० पी०, एस० डी० एम० थानेदार, डॉक्टर व व्यापारियों तथा महाराजा व महारानी को शिव बाबा की पावन राखी बाँधी गई। दूसरे दिन जालोर के कलेक्टर तथा उच्च अधिकारियों को भी राखी बाँधी गई।

पाली—सेवा केन्द्र की तरफ से भी स्थानीय टाऊन हाल में रक्षा बन्धन समारोह मनाया गया। स्थानीय कारागार में प्रोजेक्टर शो का कार्यकम रखा गया। तथा वहाँ के कैदियों को राखी बाँधकर ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

आबू रोड़—समाचार मिला है कि आबू रोड संगम भवन में बहुत ही सुन्दर-सुन्दर झाँकियाँ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर दिखाई गई। करीब आबू-रोड के १८, २० हजार आत्माओं ने देखा। इसके अलावा रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर मुख्य अधिकारियों, डॉक्टरों, व्यापारी तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बाँधी गई।

इसके अतिरिक्त बांसवाड़ा, सीकर, ब्यावर, अलवर आदि-२ से रक्षा बन्धन तथा जन्माष्टमी के

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

रक्षाबंधन के सुअवसर पर ब्र . कु. अरुणा शिमला में हिमाचल प्रदेश के महालेखापाल को पावन राखी बांध रही हैं तथा ब्र. कु. इन्द्रा जी साहित्य भेंट कर रही हैं

नारनौल के एस. डी. एम. भ्राता एस. पी. गुप्ता को ब्र. कु. नारायणी जी राखी बांधते हुए

रोहतक जिला के ज्वाइन्ट एक्साइज एवं टैक्सेशन उपायुक्त भ्राता बी. आर. गुप्ता ब्र. कु. आभा से राखी बंधवा रहे हैं

काठमांडु में ब्र. कु. सीतु भूतपूर्व अंचलाधीश तथा वर्तमान उद्योग वाणिज्य सचिव भ्राता सूर्य प्रसाद जी को पावन राखी बांध रही है, साथ में ब्र कु. राज हैं

पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है तथा सर्व गुणों की खान है

जगाधरी सेवा केन्द्र पर जुडिश्यल मैजिस्ट्रेट जय भगवान शर्मा जी ब्र. कु. कृष्णा जी से पावन राखी बंधवा रहे हैं। साथ में अन्य भाई बहन खड़े हैं

चित्र में सिरोही में रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर राखी बंधवाने के पश्चात खड़े हैं बायें से ब्र. कु. देवाराम, भ्राता विजयराज गर्ग उपजिला विकास अधिकारी, भ्राता मुकुल, उपअधीक्षक पुलिस, भ्राता अल्लादीन खां एस. डी. एम., भ्राता बालकृष्ण मल्होत्रा जिलाधीश सिरोही, ब्र. कु. शशी, शारदा, अरुणा व मोहन भाई

सहारनपुर में रक्षाबंधन के पावन पर्व पर राखी बांधने के पश्चात् चित्र में बाएं से दाएं ले. कर्नल एस. के. बुद्धिराजा, कर्नल आर. पी. सिंह तथा उनकी पत्नी, ब्र. कु. प्रकाश इन्द्रा, ब्र. कु. भगवती बैठी हैं। पीछे ब्र. कु. भाई-बहन खड़े हैं

महु सेवा केन्द्र पर रक्षाबन्धन के कार्यक्रम में ब्र.कु. शीला बहन इन्फेन्टरी स्कूल के कमान्डेन्ट मेजर जनरल एस. एल. मल्होत्रा को राखी बांध रही हैं तथा ईश्वरीय सन्देश सुना रही है

मिलट्री तथा पुलिस अधिकारी गण को ईश्वरीय सन्देश

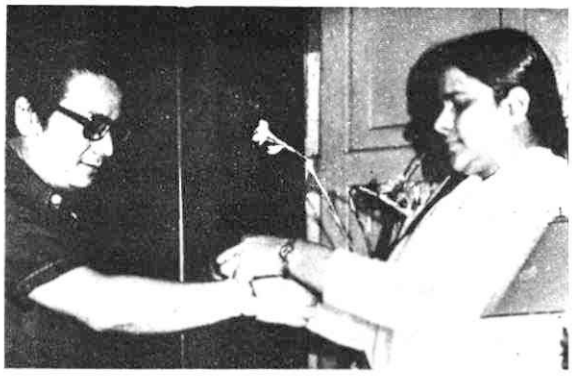

चित्रमें राखी के पुण्य दिवस पर ब्र. कु. बिन्दु जी पांश्चम बंगाल राज्य के कैदी विभाग के. डी. आई. जी. को पावन राखी बांध रही है

ब्र. कु. शकुन्तला मंगलोर में डी. आई. जी भ्राता ए. पी. दुराई को राखी बांध रही हैं। ब्र. कु. अकामालादेवी, ब्र. कु. वरादाराज साथ में दिखाई दे रहे हैं

बिहार के अतिरिक्त आई. जी. भ्राता सुधीशनारायण सिंह को ब्र. कु. निर्मलपुष्पा राखी बांध रही है। इन्द्रा बहन, रमेन्द्र भाई साथ में हैं

अजमेर के डी. आई. जी भ्राता रामनारायण जी को राखी बांधते हुए ब्र. कु. सरोज, ब्र. कु. अनुराधा साथ में हैं

ब्रह्माकुमारी बहनें रुड़की जेल में जेलर को आत्मिक स्मृति का तिलक दे रही हैं

रक्षाबन्धन के पावन दिवस पर भिवानी सैन्ट्रल जेल में राखी बांधने से पहले कैदियों को ब्र० कु० बहनों का परिचय देते हुए जेलर भ्राता एस० बी० कुश

जयपुर के डी. आई. जी. भ्राता फूलसिंह यादव जी को ब्र. कु. शील राखी बांधते हुए

कैदियों तथा जेल अधिकारियों को रहमदिल बाबा का सन्देश

पूना सैन्ट्रल जेल में ब्र० कु० उर्मिला जेलर एन० जोशी को राखी बांधने के पश्चात आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही हैं। साथ में ब्र० कु० राजन, तथा ब्र० कु० पुष्पा बहन खड़ी हैं

राखी पर्व पर कानन बहन कलकत्ता के पुलिस कमिश्नर भ्राता निरूपम सोम को पावन राखी बांधते हुए

पवित्रता से सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है

पठानकोट के ब्र. कु. भाई-बहन भ्राता गुरबचन सिंह पुलिस इन्सपैक्टर को राखी बांधने के पश्चात् चित्र में दिखाई दे रहे हैं

कलकत्ता के मुख्य गूंगे-बहरे के स्कूल में ब्रह्माकुमारी जनक बच्चों को बड़े स्नेह से राखी बांध रही हैं। पास में ब्र० कु० गीता तथा स्कूल के शिक्षकगण दिखाई पड़ रहे हैं

ब्रह्माकुमारी ऊषा जी बेलगाम में विकलांगों को राखी बांधते हुए तथा मिठाई बांटते हुए

अपंगों, विकलांगों के बीच रक्षा बन्धन

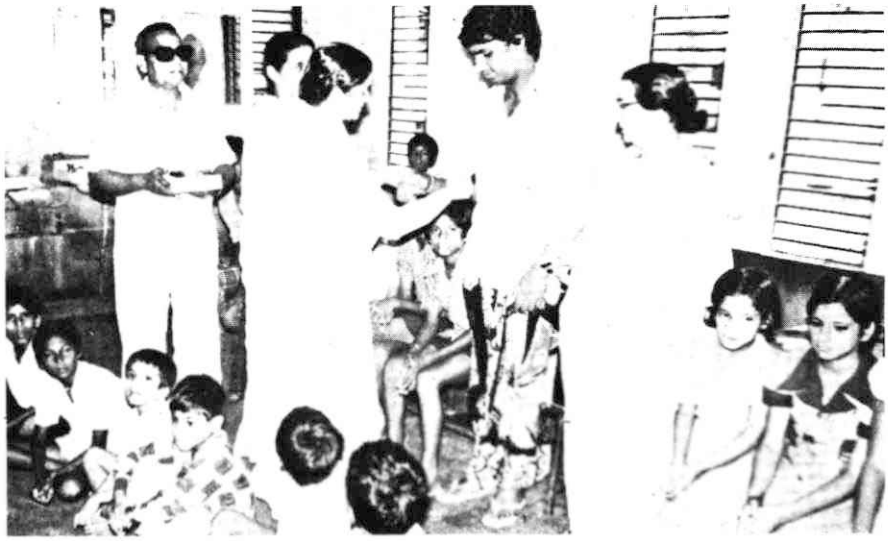

देहली में राजकीय लेडी नाएसी हायर सैकन्ड्री स्कूल (गूंगे और बहरों के लिये) के बच्चों को ब्र० कु० बिमला राखी बांध रही हैं। ब्र० कु० सुशीला तथा ब्र० कु० कृष्णपाल जी भी साथ में खड़े हैं

जोधपुर में मैडिकल एसोसिएशन में हुए कार्यक्रम में मंच पर दाएं से ब्र. कु. पूनम, डॉ० गिरीश (सम्बोधन करते हुए) ब्र. कु. रतन मोहिनी जी. डॉ. राजदान अध्यक्ष आल इण्डिया मैडीकल एसोसिएशन जोधपुर, डा. शुक्ला सचिव आल इण्डिया मैडीकल एसोसिएशन। चित्र में सभी डाक्टर बड़ ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनाते हुए

कुछ दिन पूर्व शक्तिनगर देहली सेवा केन्द्र पर कुछ सेशन जज, मैजिस्ट्रेट परिवार सहित पधारे थे। ब्र० कु० चक्रधारी तथा सुधा बहन ईश्वरीय सन्देश दे रही हैं।

बारीपदा में 'मानव का दिव्यीकरण सम्मेलन' का उद्घाटन करती हुई ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी, ब्र० कु० कमलेश जी तथा दरिद्रया भंजन मोहन्ती सु० पुलिस बारीपदा

बेलगाम मे क्षेत्रीय भट्टी उद्घाटन के अवसर पर मंच पर बाएं से भ्राता शिवाजीराव ककटकर, नगरपालक, संसद सदस्य भ्राता एस. बी. सिदनल, बी. वी. बेलड, भ्राता मनीकट्टी, कलक्टर, ब्र० कु० हृदयमोहिनी (सम्बोधन करते हुए) तथा ब्र० कु० ऊषा जी उपस्थित हैं

हुबली में स्नेह मिलन के अवसर पर बाएं से भ्राता ए. डी. नायक अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, भ्राता ज. वासुदेवन डिप्टी कमिश्नर, बहन रछप्पा वाली, तथा ब्र. कु. सुनन्दा, ब्र. कु. निर्मला जी विराजमान हैं

जगन्नाथ पुरी सेवा केन्द्र के चौथे वार्षिक समारोह में मंच पर बैठे हैं दाएं से ब्र० कु० रमेश जी, ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी, बहन कुन्तलाकुमारी आचार्या, मुख्य अतिथि अमृता मिश्राजी, ब्र० कु० निरुपमा (भाषण करते हुए) ब्र० कु० संदेशीजी

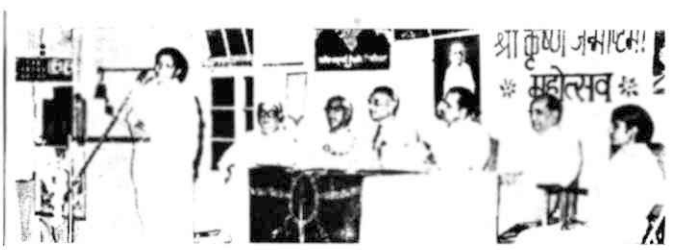

समारोह तथा उद्घाटन समारोह

जन्माष्टमी के अवसर पर शोलापुर में 'सार्वजनिक कार्यक्रम में जनसमूह के सामने प्रवचन करती ब्र. कु. सोमप्रभा

रायगढ़ में स्नेह मिलन के अवसर पर शहर के मुख्य-मुख्य व्यक्तियों को संबोधित करती हुई आदरणीय दीदी जी

वाराणसी में आयोजित विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेले में ज्योर्तिमठ बद्रिकाश्रम के वरिष्ठ शंकराचार्य स्वामी शान्तानन्द सरस्वती मेले में प्रवेश करते हुए

गांधीनगर में "प्रगति परिवर्तन समागम" में गुजरात राज्य के मत्री भ्राता अमरसिह चौधरी प्रवचन कर रहे हैं। उनकी दायीं ओर ब्र० कु० सरला तथा दमयन्ती जी, बांयीं ओर ब्र० कु० भारती जी बैठी हैं

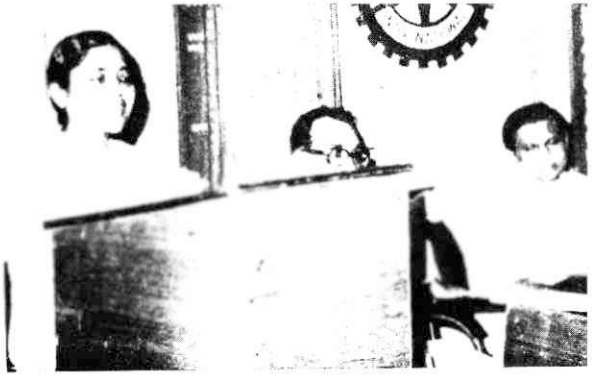

बलसार रोटरी क्लब में ब्र. कु. दक्षा बहन प्रवचन कर रही है। मंच पर रोटरी क्लब के मुख्य दिनकरभाई शाह बैठे हैं

रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर देहली में राजकीय लेडी नोएसी हायर सैकन्ड्री स्कूल (गूंगे और बहरे बच्चों के लिये) के बच्चों और वार्डन के मध्य ब्र० कु० बिमला, सुशीला तथा भ्राता कृष्णपाल जी

ब्र० कु० सरला भ्राता प्रभुदास पटवारी (भूतपूर्व गवर्नर तमिलनाडु) को राखी बांधते हुए

शोभा यात्रा का दृश्य

जामखण्डी में ब्र. कु. महादेव जी भाषण करते हुए। मंच पर बैठे हैं दाएं से के. ए. मुदगल, सी. बी. यादवाड, अरुणकुमार शाह तथा सिद्धराज पुजारी

समाना मण्डी मे प्रदर्शनी का उद्घाटन वहां के डी. एस. पी. कर रहे हैं

बोकारो स्टील के लायन्स कल्ब में की गई प्रदर्शनी का उद्घाटन बोकारो कालेज के प्रिन्सीपल द्वारा सम्पन्न हुआ

पूना में आध्यात्मिक संग्रहालय के वार्षिक उत्सव तथा रक्षा-बन्धन के अवसर पर आध्यात्मिक समारोह का दृश्य। मध्य में मेयर बबनराव पडवल जी, साथ में ब्र. कु. बृजशान्ता, ब्र. कु. विजय और दायीं ओर ब्र. कु. राजन भाई बैठे हैं

प्रवचन करने के पश्चात् काशीराज (सम्मेलन के अध्यक्ष) के साथ मंच पर बैठी हैं ब्र० कु० राज बहन, अरुण बहन तथा ब्र० कु० रामसिंह

मथुरा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन वहां के डी. एम. कर रहे हैं

हुबली सेवा केन्द्र पर जन्माष्टमी कार्यक्रम मे 'संयुक्त कर्नाटक' के प्रधान सम्पादक भ्राता सुरेन्द्र दानी जी अपने उद्गार प्रगट कर रहे हैं। मंच पर दाए से ब्र कु इष्ट लीग, डा. एच. ए. पार्शनाथ डा टी ए रामानुज डा० शिंधे डा टी एस. स्कद स्वामी विराजमान हैं

जन्माष्टमी के अवसर पर आबु रोड में सजाए गई स्वर्ग की झांकी का एक दृश्य।

भावनगर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित सांवरकुंडला शहर में भव्य झांकी का एक दृश्य। सतयुग आगमन का संकेत करती हुई यह झांकी विशेष आकर्षण का केन्द्र बनी

ब्र. कु. सरला मेहसाना के प्रसिद्ध उद्योगपति भ्राता किरण भाई पटेल को राखी का शुभ सन्देश सुनाकर आत्म स्मृति का तिलक दे रही हैं

विकारी मनुष्य कौड़ी तुल्य भी नहीं।
हीरे तुल्य वह है जो पवित्र है।।

भिवानी ज़िले के बहुत बड़े उद्योगपति भ्राता बी. बी. मेहता को ब्र. कु. अनोखी राखी बांध रही है। साथ में ब्र. कु. नारायणी, भ्राता रामेश्वर जी बैठे हैं

ब्रह्मपुर के चीफ जुडिश्यल मैजिस्ट्रेट भ्राता एस. एन. दास को ब्र. कु. नीलम पवित्र राखी बाध रही हैं

बिहार के राज्यपाल डॉ० ए. आर. किदवाई जी को ब्र. कु. निर्मल पुष्पा राखी बांधती हुई ईश्वरीय सन्देश सुना रही हैं। साथ ब्र० कु० निर्मलमणि, इन्द्रा तथा राधेश्याम भाई बैठे हैं

राजस्थान के राज्यपाल जस्टिस के० डी० शर्मा को पूनम बहन राखी बांध रही हैं। साथ में ब्र० कु० भाई शिव बाबा की याद में खड़े हैं

उड़ीसा के राज्यपाल भ्राता सी. एम. पुनाचा को 'पवित्रता और स्नेह' की सूचक राखी बांधने के पश्चात् ब्र०कु० कमलेश, सुशीला तथा अन्य ब्र० कु० भाई उनके साथ खड़े हैं

ब्र० कु० सरला बहन गुजरात के मुख्य मन्त्री को राखी बांध रही हैं, ब्र० कु० कैलाश और भावना पीछे दिखाई दे रही हैं

ब्र० कु० सुन्दरी तथा भाग बहन भीष्म नारायण सिंह भारत के लोक निर्माण मन्त्री को राखी बांधने के पश्चात् आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही हैं

Regd No. D(D)178

दादी जानकी जी के यूरोप यात्रा के समय एक पत्रकार उनसे भेंट कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० सुमन बैठी हैं

ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री भ्राता कैलाहन जी को ईश्वरीय संदेश सुनाते हुए गामदेवी (बम्बई) सेवा केन्द्र की ब्र० कु० हंसा तथा ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र० कु० शारदा और चंद्रिका

वाराणसी सर्किट हाउस में नेपाल की राजमाता श्री ५ ऐश्वर्य राज्य लक्ष्मी को ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र० कु० सुरेन्द्र जी, ब्र० कु० परनीता जी, गीता जी तथा ब्र० कु० गुप्ता जी

केनवरा (आस्ट्रेलिया) में ब्रह्माकुमारी बहनें राजकुमार चार्ल्स से भेंट करते हुए। एक ब्र० कु० उनको 'ॐ शांति' का बैज लगा रही है

ब्र० कु० सुन्दरी तथा भाग बहन श्यामलाल यादव राज्यसभा के उपाध्यक्ष को राखी बांधते हुए

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एव प्रकाशक, 151 ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D N) 178